الحمد للہ اللطیف و الصلوۃ و السلام علی رسولہ الشفیق اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الصلوۃ و السلام علیك یا رسول اللہ   وعلی الك و اصحابك یا حبیب اللہ

कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं"इस औरत को तलाक़ दे दो' आख़िर लड़कियों की पैदाइश में

क़ुसूर किस का ?

मर्द का   या   औरत का

इस्लाम और साइंस की रोशनी में

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

ज़मानए-जाहिलियत की कुछ यादें
बेटियों के फ़ज़ाइल
दिलचस्प सुवालातो-जवाबात
बच्चे की पैदाइश का सबब क्या है?
बे औलादी के4 रुहानी इलाज
पाँच लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें
साइंस क्या कहती है?
इल्मुल जनीन क्या है?
बच्चे की पैदाइश का मरहला
औलादे नरीना के रुहानी इलाज

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

किताब का नाम	:	क़ुसूर किस का ?
सने तबाअत	:	2023
सफ़हात	:	48
तादाद	:	1100
नाशिर	:	मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली
राबिता नंबर	:	+918808693818

पाँच दिन की मेहनत के बाद ये रिसाला मुकम्मल हुआ12 रजब 1444 हिजरी ब मुताबिक़ 4 फरवरी 2023 ईसवी बरोज़ सनीचर बाद नमाजे मग़रिब 7 बज कर 35 मिनट पर इख़्तिताम पज़ीर हुआ
अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि इस काविश को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए और इस को नफ़ा बख़्श बनाए

آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ و الہ و سلم

फेहरिस्त

तआ़रूफे मुसन्निफ

नाम मुह़म्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुह़म्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिए दा'वते इस्लामी हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा **ललौली** जिला **फतेहपुर हंसवा**,सूबा यू पी हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सिन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिए बम्बई चले गए थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किए और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम **जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम** कस्बा ललौली में **क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी** से क़ुरआ़ने पाक **नाज़िरा** और ह़ज़रत मौलाना **अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही** से दर्से निज़ामी के दरजा ए ऊला और कुछ दरजा ए सानिया की किताबें पढ़ीं इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिए **चिरैयाकोट** जिला मऊ तशरीफ ले गए और वहां दरजा ए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे **अल जामिअ़तुल अशरफिया** मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजा ए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल सेकामयाब होने के बाद दरजा ए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की फिर **दरजा ए राबिआ** दारुल उ़लूम **ग़ौसिया** (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गांव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज**,नेपाल में दाखिला लिया और दरजा ए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई,2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिए दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने**

सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गए और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिए दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत **ढाका** के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गए और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिअ़ात के दरजा ए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजा ए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजा ए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविया की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है।आखिरी मालूमात के मुतबिक अब तक कुल35 किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिए तोशा ए आखिरत बनाएं। आमीन

अज़ :- **अलआजिज़ मुह़म्मद शादाब खान मदनी** कोटा राजस्थान

दुरूदे पाक की फजीलत

फरमाने मुस्तफाﷺजिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस दरजात बुलंद फ़रमाता है।(نَسائی ص۲۲۲حدیث۱۲۹۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुनिया का ख़ूनी मंज़र

ऐ आशिक़ाने रसूल! इन्सान की पैदाइश का अस्ल मक़सद अल्लाह पाक की फ़रमांबर्दारी करते हुए उस की इबादत करना है मगर इस मक़सद को भुला कर इन्सान दुनिया का हो कर रह गया,कि तौहीद की जगह शिर्क ने और एक ख़ुदा की इबादत की जगह बुत परस्ती ने ले ली। उनमें कुछ तो बुतों को अपना ख़ुदा समझते हैं तो बाज़ दरख़्तों,चांद, सूरज और सितारों को पूजते हैं और कुछ फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां क़रार दे कर उन की पूजा पाट में मसरूफ़ हैं, और ये हाल सिर्फ इस ज़माने का ही नहीं है बल्कि इस्लाम आने से पहले भी ऐसा मुआमला रहा है हत्ता कि गुज़िश्ता लोगों के किरदार की पस्ती का आलम ये था कि वो दिन रात शराब खोरी, क़िमार बाज़ी(यानी जुवा)बदकारी और क़त्ल व ग़ारत गरी में मशग़ूल रहते थे। उनकी सख़्त दिली का इस बात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि लड़कियों को पैदा होते ही ज़िंदा दफ़न कर दिया करते थे।

अल ग़रज़ हर तरफ़ वहशत व बरबरिय्यत का दौर दौरा था। लड़ाईयों में आदमियों को ज़िंदा जला देना, औरतों का पेट चीर डालना,बच्चों को ज़बह करना, उन को नेज़ों पर उछाल देना उनके नज़दीक कोई ऐब ना था। ये हालत सिर्फ एक शहर या एक मुल्क के साथ ही ख़ास ना थी बल्कि तक़रीबन पूरी दुनिया में जहालत का घटा टोप अंधेरा छाया हुआ था चुनान्चे अहले फ़ारस (यानी ईरानी)अक्सर आग की पूजा करते थे और अपनी माओं के साथ गंदा गुनाह करने से भी नहीं चूकते थे। ब कसरत तुर्क शबो रोज़ बस्तियां उजाड़ने और लूट मार करने में लगे थे और बुत परस्ती और लोगों पर ज़ुल्मो जफ़ा की आंधियां चलाना उनका

तरीक़ा था। कई अपने हाथों से बनाए हुए बुतों की पूजापाट में मशग़ूल थे। बहरे कैफ़ हर तरफ़ कुफ़्र-व-ज़ुल्मत का दौर दौरा था। काफ़िर इंसान बदतर अज़ हैवान हो चुका था।

ज़मानए जाहिलियत की कुछ यादें

ऐ आशिक़ाने रसूल! दुनिया के इस ख़ूनी मंज़र में इस्लाम से पहले अगर दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुआशरों में औरत की हैसियत देखी जाये तो मालूम होगा कि औरतें मर्दों की महकूम(यानी बान्दी) थीं,मर्द ख़्वाह बाप होता या शौहर,बेटा होता या भाई, उनसे जैसा चाहे सुलूक करता,औरतों की हैसियत बस एक ख़िदमत गार की सी थी, कहीं उनके साथ जानवरों से बदतर सुलूक होता तो कहीं विरासत में दीगर माल-व-अस्बाब की तरह उनका भी बटवारा होता। कहीं उन्हें शौहर की मौत के साथ उस की चिता (यानी लकड़ियों का वो ढेर जिस पर हिंदू अपने मुर्दे को जलाते हैं)में ज़िन्दा जल कर सती होना पड़ता (यानी बेवा को मुर्दा शौहर की लाश के साथ ज़िंदा जला दिया जाता)तो कहीं पैदा होते ही उन्हें ज़मीन में ज़िन्दा दफ़्न कर दिया जाता क्योंकि बेटी की पैदाइश को बाइसे आर (यानी शर्मिंदगी)समझा जाता था, बसा-औक़ात किसी शख़्स को मालूम होता कि उस के यहां बेटी की विलादत हुई है तो वह कई दिनों तक लोगों के सामने ना आता और ग़ौर करता रहता कि वो इस मुआमले में क्या करे? आया ज़िल्लत बर्दाश्त करके बेटी की परवरिश करे या आर से बचने के लिए अपनी बेटी को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़्न कर दे। जैसा कि पारा14 सूरतुल नहल की आयत नंबर 58और 59 में इरशाद होता है:

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ(۵۸) یَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ
سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ(۵۹)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:और जब उनमें किसी को बेटी होने की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुँह काला रहता है और वो ग़ुस्सा खाता है।लोगों से छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

और ये बातें फ़र्ज़ी (यानी बनाउटी नहीं बल्कि हक़ीक़त पर मबनी हैं जैसा कि कुराने अज़ीम ने ख़ुद उस की गवाही दी और इस का सुबूत अहादीसे मुबारका में भी मौजूद है चुनांचे:मेरे शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत अपने रिसाले **ज़िंदा बेटी कुँवें में फेंक दी** में लिखते हैं:

ज़िंदा बेटी कुँवें में फेंक दी

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ में हाज़िर हो कर अर्ज़ की:ऐ अल्लाह के रसूल! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ हम ज़माना-ए-जाहिलीय्यत में बुत परस्त थें, अपनी औलाद को मार डालते थे, मेरी एक बेटी थी, जब मै उसे बुलाता तो ख़ुश होती थी। एक दिन मैंने उसे बुलाया तो ख़ुशी ख़ुशी मेरे पीछे चलने लगी, हम नज़दीक ही एक कुंवें पर पहुंचे, मैंने उस का हाथ पकड़ा और कुँवें में फेंक दिया (बे-चारी रो-रो कर)अब्बू जान! अब्बू जान! चिल्लाती रह गई (और मैं वहां से चल दिया।)

(ये सुनकर)रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की चश्माँने करम (यानी मुबारक आँखों) से आँसू जारी हो गए। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया:"इस्लाम ज़माना-ए-जाहिलीय्यत में होने वाले गुनाहों को मिटा देता है। "(سُنَنِ دارِمی ج۱ص۱۴ حدیث ۲ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु-अकबर!एक सगा बाप अपनी सगी औलाद के साथ ऐसा करना कैसे बर्दाश्त कर लेता होगा? एक और दिल हिला देने वाला वाक़िआ पढ़िए:

अब्बू ! क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं

एक शख़्स ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ मै जब से मुसलमान हुआ हूँ मुझे इस्लाम की हलावत यानी मिठास नसीब नहीं हुई, ज़माना-ए-जाहिलीय्यत में मेरी एक बेटी थी, मैंने अपनी बीवी को हुक्म दिया कि उसे (उम्दा लिबास वग़ैरा से आरास्ता करे, फिर मै उसे साथ लेकर घर से चला, एक गहरे गढ़े के पास पहुंच कर उसे अंदर फेंकने लगा तो उस ने (बेक़रारी के साथ

रोते हुए कहाः अब्बू क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ? मगर मैंने (उस के रोने धोने, चीख़ने चिल्लाने की पर्वा किए बिग़ैर उसे इस गहरे गढ़े में फेंक दिया।

ऐ अल्लाह के रसूल! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ जब अपनी बेटी का ये जुमला(अब्बू क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ? याद आता है बेचैन हो जाता हूँ फिर मुझे किसी चीज़ में लुत्फ़ नहीं आता। अल्लाह के रसूल! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमायाः इस्लाम ज़मानए-जाहिलीय्यत में होने वाले गुनाहों को मिटा देता है जबकि इस्लाम की हालत में (यानी मुसलमान से सरज़द होने वाले गुनाहों को इस्तिग़फ़ार मिटाता है।(تفسیر کبیر ج۷ ص۲۲۵ ملخصا)

अल्लाहु अकबर! ऐसे लोग भी दुनिया में गुज़रे हैं, ऐ आशिक़ाने रसूल! इन वाक़िआत को पढ़ या सुन कर क्या आपको तअज्जुब नहीं होता कि ये कैसे कर लिया करते थे ? अपनी सगी औलाद के साथ ऐसा सुलूक ,अल्लाह अल्लाह मगर अब ज़रा दिल थाम के पढ़ो ये तो एक बेटी को ज़िंदा दफ़्न करना था,हमारे मुआशरे में ऐसे लोग भी गुज़रे हैं जो आठ,आठ बेटियों को दफ़्न कर के, चैन की नींद सो जाते थे,जी हाँ कंज़ुल उम्माल की हदीस में हैः

आठ बेटियों को ज़िंदा दरगोर किया

हज़रते कैस बिन आसिम(رضی اللہ عنہ) ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की मैंने ज़माना-ए-जाहिलिय्यत में अपनी आठ बेटियों को ज़िंदा दरगोर(यानी ज़िंदा दफ़्न)किया है। अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَने इरशाद फ़रमाया:"हर एक के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करो।' अर्ज़ की मेरे पास ऊंट हैं । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلمने फ़रमाया चाहो तो हर एक की तरफ़ से एक बदना यानी ऊंट की क़ुर्बानी कर दो। (کنز العمال ج۲ ص۲۳۱ حدیث۳۶۸۷)

ऐ आशिक़ाने रसूल!इस आलम गीर ज़ुल्मत-व-जाहिलिय्यत और ज़ुल्मो सितम को किस ने ख़त्म किया? बेटियों को ज़िंदा दर गोर होने से किस ने बचाया? इस का जवाब एक ही है कि जब इस्लाम की सुब्हे नूर तुलूअ हुई हर तरफ़ कुफ़्र और ज़ुल्मो सितम का अंधेरा ख़त्म हो गया और यूं बेटियों को इस्लाम की बरकत

से एक नई ज़िन्दगी मिली। जो लोग पहले बेटियों को ज़िंदा दरगोर करने में फ़ख़र महसूस करते थे,अब बेटियों को अपनी आँखों का तारा समझने लगे क्योंकि बे-कसों के ग़मख़्वार,हबीबे परवरदिगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उनके सामने ना सिर्फ अपनी शहज़ादियों से मुहब्बत का अमली नमूना पेश किया बल्कि अपने मुबारक और नूर भरे इर्शादात के ज़रीये ये पैग़ाम भी दिया कि बेटियों को आर ना समझा जाये क्योंकि ये अल्लाह पाक की रहमत और मग़फ़िरत का ज़रीया हैं। नीज़ अल्लाह के महबूब ﷺ ने औलाद बिलख़ुसूस बेटियों की परवरिश के मुताअल्लिक़ फ़ज़ाइल बयान फ़रमाकर उनकी एहमीयत को भी ख़ूब उजागर फ़रमाया।

और इस का ये असर हुआ कि दुनिया के इस ख़ूनी मंज़र के अंदर बेटी की आबरू और इज़्ज़त होने लगी,क्या आप देखते नहीं बूढ़ा बाप अपनी कमर पर बोरियां लाद लाद कर मज़दूरी करता है कि मुझे अपनी बेटी के हाथ पीले करने हैं, ये बाप तो सफ़्फ़ाक था, ये तो बेटी को क़त्ल करता था, मगर आज वही बाप ओवर टाइम काम कर रहा है, बेटी के लिए मज़दूरी पर मज़दूरी कर रहा है, फ़ैक्ट्री में भाई ओवर टाइम काम कर रहा है, ये तो ज़िंदा दरगोर करने वाले लोग थे, क्या माजरा हुआ? किस ने डगर बदली? किस ने ज़माने का रुख पलट दिया? चौदह सदी पहले की तारीख़ पढ़ कर देखो, जो बेटी को धक्का देकर ज़िंदा दरगोर करते थे, और उनको इस पर फ़ख़र था, आक़ाए करीमﷺने उस दौर में फ़रमाया :ऐ बेटियों को दरगोर करने वालों और मनहूस समझने वालों सुन लो मेरी फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है, जिस दौर में बेटियों को ज़िंदा दरगोर किया जा रहा था, उस दौर में आक़ा ﷺने क़ौलन और अमलन दोनों तरीक़ों से बेटियों की इज़्ज़त को लोगों के सामने रखा। और अपने मुबारक ज़बाने अक़्दस से इरशाद फ़रमाया।

बेटियों के फ़ज़ाइल

(1)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: बेटियों को बुरा मत समझो, बेशक वह मुहब्बत करने वालियाँ हैं।(مُسندِ امام احمد بن حنبل ج۶ ص۱۳۴ حدیث ۱۷۳۷۸)

(2)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिसके यहां बेटी पैदा हो और वो उसे ईज़ा ना दे और ना ही बुरा जाने और ना बेटे को बेटी पर फ़ज़ीलत दे तो अल्लाह पाक उस शख़्स को जन्नत में दाखिल फ़रमाएगा।

(المستدرک ج۵ ص۲۴۸ حدیث۷۴۲۸)

(3)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिस शख़्स पर बेटियों की परवरिश का बोझ आ पड़े और वह उनके साथ हुस्ने सुलूक (यानी अच्छा बरताव) करे तो ये बेटियां उस के लिए जहन्नम से रोक बन जाएँगी।

(مسلم ص۱۴۱۴ حدیث۲۶۲۹)

(4)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जब किसी के यहाँ लड़की पैदा होती है तो अल्लाह पाक फ़िरिश्तों को भेजता है जो आकर कहते हैं: ऐ घर वालो! तुम पर सलामती हो। फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साय में ले लेते हैं और इस के सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं कि यह एक कमज़ोर जान है जो एक नातवां यानी कमज़ोर से पैदा हुई है, जो शख़्स इस नातवां जान की परवरिश की ज़िम्मेदारी ले लेगा कियामत तक अल्लाह पाक की मदद उस के शामिले हाल रहेगी।(مجمع الزوائد ج۸ ص۲۸۵ حدیث۱۳۴۸۴)

(5)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिसकी तीन बेटियां हों, वह उनके साथ अच्छा सुलूक करे तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। अर्ज़ की गई और दो हों तो? फ़रमाया :और दो हों तब भी। अर्ज़ की गई अगर एक हो तो ? फ़रमाया अगर एक हो तो भी।(معجم الاوسط ج۴ ص۳۴۷ حدیث۶۱۹۹ ملخّصاً)

(6)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिसकी तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों फिर वह उन की अच्छी तरह परवरिश करे और उनके मुआमले में अल्लाह पाक से डरता रहे तो उस के लिए जन्नत है।(ترمذی ج۳ ص۳۶۷ حدیث۱۹۲۳)

(7)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिसकी तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वह उनके साथ अच्छा सुलूक करे तो वो जन्नत में दाख़िल होगा। (ترمذی ج۳ص۳۶۶حدیث۱۹۱۹)

(8)--- हुज़ूरे पाकﷺ का फरमाने रहमत निशान है: जिसने अपनी दो बेटियों या दो बहनों या दो रिश्तेदार बच्चियों पर सवाब की नीयत से ख़र्च किया यहां तक कि अल्लाह पाक उन्हें बेनियाज़ कर दे यानी उनका निकाह हो जाए या वह साहिबे माल हो जाएं या उनकी वफ़ात हो जाये तो वह उस के लिए आग से आड़ हो जाऐंगी।(مسند امام احمد بن حنبل ج۱۰ص۱۷۹حدیث۲۶۵۷۸)

देने में बेटियों से पहेल करने की फ़ज़ीलत

हज़रते अनस बिन मालिक(رضی اللہ عنہ)से मरवी है कि हुज़ूरे पाकﷺ का फरमान है:"जो बाज़ार से अपने बच्चों के लिए कोई नई चीज़ लाए तो वह इन (यानी बच्चों)पर सदक़ा करने वाले की तरह है और उसे चाहिए कि बेटियों से इब्तिदा (यानी शुरूआत)करे क्योंकि अल्लाह पाक बेटियों पर रहम फ़रमाता है और जो शख़्स अपनी बेटियों पर रहमत व शफ़क़त करे वो ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाले की मिस्ल है और जो अपनी बेटियों को ख़ुश करे अल्लाह पाक बरोज़े क़ियामत उसे ख़ुश करेगा।(اَلفِردوس ج۲ص۲۶۳حدیث۵۸۳۰)

अल्लाहु-अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल! सुना आपने अगर कोई बेटियों से नफ़रत करने वाला भी हो तो वो भी इन इर्शादात को सुनकर बेटियों से मुहब्बत करने वाला बन जाएगा,उस के दिल में बेटियों के लिए शफ़क़त व मुहब्बत पैदा हो जाएगी,मगर अफ़सोस एक बार फिर जहालत अपने उरूज को है,आपने बेटी को ज़िंदा दफ़न कर देने के ताअल्लुक़ से जमानए जहालत की झलकियाँ मुलाहज़ा कीं। मगर एक बार फिर बाज़ लोग इस्लामी तालीमात भुला देने की वजह से बेटी की पैदाइश को बुरा समझने और बे रहमी का मुज़ाहरा करने लगे हैं। जिसकी बिना पर आए दिन क़त्लो ग़ारत गरी की वारदातें हो रही हैं, मेरे शैखे तरीक़त,अमीरे अहले सुन्नत,बानिए दावते इस्लामी,हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इलयास अत्तार कादरी रज़वी अपने रिसाले **ज़िंदा बेटी कुँवें में फेंक दी** के सफ़ा नंबर 4 में 5 लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें "नक़्ल फ़रमाते हैं चुनांचे

पाँच लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें

(1)**---** छठी बेटी की पैदाइश पर ज़ालिम बाप ने10 दिन की बच्ची को पानी के टब में डुबो कर मार डाला, एहतिजाज पर बीवी को भी सोते में फायरिंग कर के क़त्ल कर दिया, मुजरिम को गिरफ़्तार कर लिया गया।

(روزنامہ جنگ آن لائن ۱۴ جولائی ۲۰۱۲ بِالتصرف)

(2)**---** चंद हफ़्ते पहले एक शख़्स ने बेटी पैदा होने पर बीवी को आग लगा कर मार दिया था।(روزنامہ جنگ آن لائن ۱۴ جولائی ۲۰۱۲ بِالتصرف)

(3)**---** जुलाई में बेटी की पैदाइश पर 25 साला बीवी को शौहर और ससुरालियों ने ज़िंदा जला दिया था।(روزنامہ جنگ آن لائن ۱۴ جولائی ۲۰۱۲ بِالتصرف)

(4)**---** मजाज़ी इश्क़ की बुनियाद पर दोनों में लव मैरिज हो गया। अल्लाह ने एक बेटा और दो बेटियां दीं। कुछ अरसे बाद तीसरी बेटी की विलादत हुई, इस पर आग बगूला हो कर बेवक़ूफ़ शौहर ने बीवी को इस बेदर्दी से मारा कि वो बेहोश हो गई और अस्पताल पहुंच कर बेचारी ने दम तोड़ दिया।

(روزنامہ جنگ آن لائن ۱۴ جولائی ۲۰۱۲ بِالتصرف)

(5)**---** पंजाब के एक देहाती इलाके में बे रहम बाप ने एक दिन की बच्ची को ज़िंदा दफ़न कर दिया पुलिस ने मुजरिम को गिरफ़्तार कर लिया। तफ़सीलात के मुताबिक मुजरिम के घर छठी बेटी पैदा हुई थी। ज़ालिम बाप का कहना है कि इस की बेटी बदसूरत थी, उस का चेहरा बिगड़ा हुआ था जिस पर उसने डाक्टर से बच्ची को ज़हरीला इंजैक्शन लगाने को कहा, डाक्टर के इनकार पर उसने बच्ची को ज़िंदा दफ़न कर दिया।(روزنامہ جنگ آن لائن ۱۴ جولائی ۲۰۱۲ بِالتصرف)

ज़िंदा बच्ची प्रेशर कूकुर में प्रेशर

5बच्चियां थीं और छठी बार विलादत होने वाली थी। शौहर ने एक दिन अपनी बीवी से कहा कि अगर अब की बार भी तूने बच्ची जनी तो मैं तुझे नौमौलूद बच्ची समेत क़त्ल कर दूँगा। हिजरी सन1426 के रमज़ानुल मुबारक की

तीसरी शब 8-10-2005) को फिर बच्ची ही की विलादत हुई। सुब्ह के वक़्त बच्ची की माँ की चीख़ो पुकार की परवा किए बग़ैर उस बे रहम बाप ने अपनी फूल जैसी ज़िंदा बच्ची को उठा कर प्रैशर कूकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दिया! यकायक प्रैशर कूकर फटा और साथ ही ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आ गया, देखते ही देखते वो ज़ालिम शख़्स ज़मीन के अंदर धँस गया। बच्ची की माँ को ज़ख़्मी हालत में बचा लिया गया और ग़ालिबन उसी के ज़रीए इस दर्दनाक क़िस्से का पता चला। इस ज़लज़ले में एक इत्तिला के मुताबिक़ दो लाख से ज़ाइद अफ़राद फ़ौत हुए।

(زندہ بیٹی کنویں میں پھینک دی ص۵)

अल्लाह चाहे तो बेटा दे या बेटी या कुछ ना दे

इस्लाम ने बेटी को अज़मत बख़्शी और उस का वक़ार बुलंद किया है, मुसलमान अल्लाह पाक का आजिज़ बंदा और उस के अहकाम का पाबंद होता है, बेटा मिले या बेटी या बे औलाद रहे हर हाल में उसे राज़ी रहना चाहिए। पारा25 सूरह शूरा की आयत49और50में इरशाद होता है

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۙ﴿۴۹﴾ اَوْ

يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बाँझ कर दे, बेशक वो इल्मो क़ुदरत वाला है।

क़ुसूर किस का है

मगर सद करोड़ अफ़सोस!आजकल मुसलमानों की एक तादाद "बेटी "की पैदाइश को नापसंद करने लगी है और बाज़ माँ बाप पेट में बच्चा है या बच्ची इस की मालूमात के लिए बेक़रार व बेचैन रहते हैं,अगर किसी औरत के दो या तीन "बेटी"पैदा हो गईं तो उस औरत की ज़िंदगी एक बांदी से बदतर हो जाती है कि मैके वाले हों या ससुराल वाले, शौहर हो या नंद,सास हो या सुसर हर एक उस बेचारी को ताना देने लगते हैं और तरह तरह से उस की दिल-शिकनी की जाती है,

और इसी पर बस नहीं किया जाता बल्कि बाज़ घरानों में उस औरत को तलाक़ तक दे दी जाती है,अल-हासिल हमारे मुआशरे में बेटियों की पैदाइश में सिर्फ और सिर्फ औरत को क़ुसूर वार ठहराया जाता है।

बच्चे की पैदाइश का सबब

हालाँकि ये हर कोई जानता है कि बच्चे की पैदाइश का सबब मर्द व औरत की मनी है कि जब तक दोनों की मनी नहीं मिलेगी उस वक़्त तक बच्चे का वुजूद नहीं हो सकता,अब आख़िर पता कैसे चले कि बेटी की पैदाइश में क़ुसूर किस का है? मर्द का या औरत का। अगर कोई यह कहे कि क़ुसूर औरत का है तो आप ही बताईए इस की क्या दलील है? क्या 'बेटी' की पैदाइश सिर्फ़ औरत की मनी से हुई है ? अगर नहीं तो मर्द का क़ुसूर क्यों नहीं बता रहे? कि "बेटी"की पैदाइश में मर्द की मनी भी शामिल है। अगर "बेटी' की पैदाइश में औरत का क़ुसूर है तो मर्द का भी बराबर का क़ुसूर है,अगर कोई "बेटी' की पैदाइश में औरत को ताना देता है तो उसे मर्द को भी ताना देना चाहिए।

जदीद साइंस क्या कहती है?

सवाल:बच्चे की जिन्स की तअय्युन के मुताअल्लिक़ जदीद साइंस क्या कहती है?

जवाब:बच्चे की जिन्स की तअय्युन(यानी लड़का पैदा होगा या लड़की) के मुताअल्लिक़ जदीद मेडीकल साइंस ये कहती है कि:"बच्चे की जिन्स का इन्हिसार मर्द की मनी या स्पर्म पर होता है,औरत के बैज़े पर नही। मर्द के एक जरसूमे के अंदर 23क्रोमोसोम्ज़ होते हैं। इसी तरह औरत के एक बैज़े के अंदर भी23 क्रोमोसोम्ज़ होते हैं। जब जरसूमे और बैज़े का मिलाप होता है तो ये सब जरसूमे जोड़ों की शक्ल में मिल जाते हैं। इसी तरह कुल 23 जोड़े बन जाते हैं यानी कुल क्रोमोसोम्ज़ की तादाद 46 होती है। उनमें से22जोड़े ग़ैर जिन्सी होते हैं और उन को आटोसोम कहा जाता है। जबकि23 वां जोड़ा जिन्सी जोड़ा होता है। और यही जोड़ा जनीन(यानी बच्चे)की जिन्स का तअय्युन करता है कि वो लड़का होगा या लड़की। मर्द के जरसूमे के अंदर दो अक़साम के क्रोमोसोम्ज़ होते हैं। जिनको

ऐक्स X' या वाई Y' कहा जाता है। मगर औरत के बैज़े के अंदर तमाम क्रोमोसोम्ज़ X होते हैं। क्रोमोसोम्ज़ को येह नाम उन हुरूफ़ से मुशाबहत की बिना पर दिए गए हैं। वाई Y" क्रोमोसोम में मर्दाना जिन्स होता है जबकि ऐक्स X" क्रोमोसोम में ज़नाना जिन्स होता है।

इन्सानी बच्चे की तख़्लीक़ की इब्तिदा इन क्रोमोसोम्ज़ के आपस में मिलाप से शुरू होती है। जबकि जिन्स का तअय्युन 23 वें जोड़े पर होता है। अगर 23 वां जोड़ा XX है तो जन्म लेने वाला बच्चा लड़की होगी और अगर ये जोड़ा XY है तो जन्म लेने वाला बच्चा लड़का होगा। दूसरे अल्फ़ाज़ में यूं समझें कि अगर मर्द का 23 वां क्रोमोसोम X है तो जैसे ही ये औरत के 23 वें क्रोमोसोम X से मिलेगा तो पैदा होने वाला बच्चा लड़की होगी। और अगर मर्द का 23 वां क्रोमोसोम Y है तो औरत के X से जब यह मिलाप करेगा तो पैदा होने वाला बच्चा लड़का होगा। यह तमाम मालूमात हाल ही में जदीद तिब्बी तहक़ीक़ से ही हासिल हुई है, इस से पहले किसी को कुछ भी मालूम ना था।

पस जदीद मेडीकल साइंस ने इस बात को वाज़ेह कर दिया कि बेटी की पैदाइश में औरत का कोई क़ुसूर नहीं बल्कि बेटा और बेटी की तअय्युन का ज़िम्मेदार ख़ुद मर्द है लिहाज़ा क़ुसूर वार भी मर्द ही ठहरेगा।

सवाल:बच्चे की जिन्स के तअय्युन के मुताअल्लिक़ इस्लाम क्या कहता है?

जवाब:बच्चे की जिन्स की तअय्युन के मुताअल्लिक़ इस्लाम ने 1400 साल पहले ही ऐलान फ़रमा दिया था कि इसका दारो मदार मर्द पर ही है जैसे कि अल्लाह पाक क़ुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है:

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَیْنِ الذَّكَرَ وَ الْاُنْثٰى(۴۵) مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى(۴۶) (پ۲۷،النجم،۴۵-۴۶)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:और येह कि उसी ने दो जोड़े बनाऐ नर और मादा,नुतफ़ा से जब डाला जाये।

नुतफ़ा इन्सान के उज़्वे तनासुल से निकलने वाली मनी के पानी को कहते हैं और तुमना का मतलब है जब वो टपकाई जाती है। पस इस आयत में बताया

गया कि बच्चे की जिन्स का इन्हिसार मर्द की मनी पर है कि वही अपनी मनी को टपकाटा है।

और सूरह अल कियामा में अल्लाह पाक ने इसी मज़मून को इस तरह बयान किया है:

اَلَمْ یَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِیٍّ یُّمْنٰی(۳۷) ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰی(۳۸) فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَیْنِ الذَّكَرَ وَ الْاُنْثٰی(۳۹) (پ۲۹، القیامۃ،۳۷۔۳۸۔۳۹)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:क्या वो एक बूँद ना था उस मनी का जो(रहमे मादर में)गिराई जाये।फिर ख़ून का लोथड़ा हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया फिर ठीक बनाया।तो उस से दो जोड़े बनाए मर्द और औरत।

इस आयत में भी अल्लाह पाक यही इरशाद फ़रमा रहा है कि मर्द की मनी का थोड़ा सा हिस्सा या मिक़दार या क़तरा जो औरत के रहम के अंदर टपकाया जाता है,वही बच्चे की जिन्स का ज़िम्मेदार है।

अब क्या ख़्याल है?

क़ुरआन और साइंस के इस बयान से हमें बख़ूबी बताया गया है कि बच्चे की जिन्स का ज़िम्मेदार मर्द है औरत नहीं। मगर फिर भी हमारे यहां बद क़िस्मती से औरत के अगर लड़की पैदा हो जाऐ तो उस के ससुराल वाले औरत को ही इस का ज़िम्मेदार जानते हैं और उसे बुरा भला कहते हैं। जब कि औलाद के मुताअल्लिक़ इस्लामी तसव्वुर येह है कि येह अल्लाह पाक ही की मर्ज़ी है कि वो जिसे चाहे लड़के दे और जिसे चाहे लड़कियां दे और जिसे चाहे कुछ ना दे। जैसा कि अल्लाह पाक सूरतुश्शूरा की आयत नंबर 49.50, में इस बात को इस तरह बयान फ़रमाता है

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ؕ یَهَبُ لِمَنْ یَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ یَهَبُ لِمَنْ یَّشَآءُ الذُّكُوْرَ(۴۹) اَوْ یُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ یَجْعَلُ مَنْ یَّشَآءُ عَقِیْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ(۵۰)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे। या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बाँझ कर दे बेशक वो इल्मो क़ुदरत वाला है।

जबकि साइंसी ज़बान में ये अल्लाह पाक ही की मर्ज़ी है कि वह मर्द की मनी में x जरसूमे पैदा करता है या y जरसूमे। या दोनों में से कोई भी पैदा ना करे कि जिससे औरत को कोई बच्चा ही न हो। चुनान्चे बच्चे की जिन्स का इंतिज़ाम अल्लाह पाक ने मर्द की मनी के अंदर ही रखा है, औरत के अंडे या बैज़े के अंदर नहीं। चुनान्चे इस मसले में भी अहले बसीरत पर अयाँ हो गया होगा कि क़ुरआन ने जो कुछ 1400 साल पहले फरमाया था उसको अब जदीद साइंस भी बयान कर रही है।

सवाल: क़ुरआनो हदीस में इन्सान की तख़्लीक़ को कितने मराहिल में बयान किया गया है?

जवाब: क़ुरआनो हदीस में इन्सान की तख़्लीक़ को पाँच मराहिल में बयान किया गया है:

(1) नुतफ़ा (2) अलका (3) मुदग़ा ग़ैर मुख़ल्लका
(4) मुदग़ा मुख़ल्लका (5) रूह का फूकना

चुनान्चे अल्लाह पाक का इरशाद है:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَیْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَیِّنَ لَكُمْؕ وَ نُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا. (پ۱۷،الحج،۵)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:ऐ लोगो अगर तुम्हें क़ियामत के दिन उठने के बारे में कुछ शक हो तो(इस बात पर ग़ौर कर लो कि) हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर पानी की एक बूँद से फिर जमे हुए ख़ून से फिर गोश्त की बोटी से जिसकी शक्ल बन चुकी होती है और अधूरी भी होती है ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी

क़ुदरत को ज़ाहिर फ़रमाएं और हम माओं के पेट में जिसे चाहते हैं उसे एक मुक़र्रर मुद्दत तक ठहराए रखते हैं फिर तुम्हें बच्चे की सूरत में निकालते हैं।

इस आयत के तहत तफ़सीर सिरातुल जिनान में लिखा है:अल्लाह पाक इन्सान की पैदाइश किस तरह फ़रमाता है और उस को एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ किस तरह मुंतक़िल करता है,इस का कुछ बयान तो इस आयत में हुआ और इस की मज़ीद तफ़सील सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की हदीस में है,चुनांचे सरकारे दो आलम ﷺने इरशाद फ़रमाया"तुम लोगों की पैदाइश का माद्दा माँ के पेट में चालीस दिन तक नुत्फ़ा की सूरत में रहता है, फिर उतनी ही मुद्दत जमा हुआ ख़ून हो जाता है, फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की तरह रहता है, फिर अल्लाह पाक एक फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़,उस की उम्र, उस के अमल, उस का बद-बख़्त या सआादत मंद होना लिखता है, फिर इस में रूह फूंक देता है।

(بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم صلوات اللہ علیہ وذرّیتہ، ۲/۴۱۳، الحدیث:۳۳۳۲،)

(مسلم، کتاب القدر، باب کیفیّۃ الخلق الادمیّ فی بطن امّہ۔۔۔الخ، ص ۱۴۲۱، الحدیث: ا(۲۶۴۳)

और अब जदीद मेडीकल साइंस भी इन्हीं मराहिल को तस्लीम करती और बयान करती है।

सवाल: इल्मुल जनीन किसे कहते हैं?

जवाब:इल्मुल जनीन, तशरीहुल अबदान(Anatomy)की एक शाख़ है जिस में नर और मादा के माद्दा-ए-तौलीद के मिलने से जो एक ख़लीया(Zygote) बनता है,उस के मुताले से इब्तिदा करते हुए जनीन की बनावट,उस की नशो नुमा के मराहिल, रहमे मादर के अंदर परवरिश के दौरान मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ आज़ा के बनने का अमल और उन की तकमील,यहां तक कि बच्चे की पैदाइश होने तक के मराहिल को ज़ेरे बहेस लाया जाता है।

(نجیب الحق، ڈاکٹر، علم تشریح الابدان، العلم پبلیکیشنز، پشاور، مارچ، ۲۰۱۸ء، ص ۴۴)

सवाल:क्या इस्लाम से पहले इस इल्म के मुताअल्लिक़ बुनियादी मालूमात थी?

जवाब:नुज़ूले क़ुरआन से पहले इस इल्म में कोई तहक़ीक़ी पेश रफ़्त नहीं हुई थी और लगता यही है कि इस बारे में ज़्यादा तर क़यास आराईयों से काम लिया जाता था। फिर क़ुरआने करीम ने इस मौज़ू पर तफ़सीली बहेस की और रहमे मादर के अंदर हमल के इर्तिक़ाई मदारिज को वज़ाहत के साथ बयान किया और मौजूदा दौर की जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक़ वह हर्फ़ बा हर्फ़ दुरुस्त है। एक अरब मुहक़्क़िक़ मुहम्मद नबील अलशोकानी ने लिखा है कि अरस्तू के दौर से ले कर नबीए अकरमﷺ पर नुज़ूल वही तक यही नज़रिया था कि जनीन (यानी बच्चा)मर्द के नुतफ़े में कामिल तौर पर मौजूद रहता है लेकिन उस का जिस्म निहायत छोटा होता है जिसकी वजह से उस को देखा नहीं जा सकता। फिर रहम में दाखिल हो कर नशो-नुमा पाता है जिस तरह कि बीज बढ़ता है,उस के बाद अरस्तू ने इस नज़रिया से रुजू करके एक नए नज़रिया की बुनियाद डाली जिसके मुताबिक़ जनीन (यानी बच्चा)औरत की माहवारी के ख़ून में मौजूद रहता है, फिर मर्दाना क़तरात उस को गाढ़ा कर देते हैं। (الشوکانی، محمد نبیل، الاعجاز الالٰہی فی خلق الانسان، ۲۰۰۲ء، ص:۱۹)

नीज़ फ़िर्दौसुल हिकमत में अरस्तू का ये क़ौल भी नक़ल किया गया है : "लड़का और लड़की बनने का सबब हवा भी होती है"।(فردوس الحکمت ص ۴۶)

सवाल: क्या क़ुराने पाक में इल्मुल जनीन के मुताअल्लिक़ बयान मौजूद है?

जवाब:क़ुराने पाक में रहमे मादर के अंदर परवरिश पाने वाले बच्चे(यानी जनीन के मुख़्तलिफ़ मराहिल पर तफ़सील से रौशनी डाली गई है। हालाँकि नुज़ूले क़ुरआन के वक़्त इल्मुल जनीन के मुताअल्लिक़ मालूमात के ज़राए मौजूद नहीं थे और मालूमात की मौजूदा सहूलिय्यात का उस वक़्त तसव्वुर भी नहीं था। लेकिन क़ुरआन ने जनीन के मदारिज की ठीक ठीक निशान देही कर के इल्मे जनीनिय्यात की तरफ़ रहनुमाई का एक नया बाब खोला। चुन्नांचे पारा 18,सूरए मुअमिनून में इरशादे रब्बानी है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ

خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۖ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۱۸، المؤمنون، ۱۲-۱۳-۱۴)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया।फिर उसे पानी की बूँद किया एक मज़बूत ठहराव में।फिर हमने उस पानी की बूँद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून के लोथड़े को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बेहतर बनाने वाला है।

सवाल: क्या इल्मुल जनीन के मुताअल्लिक़ अहादीस में भी कुछ बयान मौजूद है?

जवाब:जी हाँ अहादीस मुबारका में भी तख़्लीक़े जनीन के मुख़्तलिफ़ मदारिज पर तफ़सीली बहेस की गई है और इस बारे में कसीर अहादीस मौजूद हैं चुनान्चे:

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया"तुम लोगों की पैदाइश का माद्दा माँ के पेट में चालीस दिन तक नुतफ़ा की सूरत में रहता है, फिर उतनी ही मुद्दत जमा हुआ ख़ून हो जाता है, फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की तरह रहता है, फिर अल्लाह पाक एक फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़,उस की उम्र, उस के अमल,उस का बद-बख़्त या सआदत-मंद होना लिखता है, फिर उस में रूह फूंक देता है।

(بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم صلوات اللہ علیہ وذرّیتہ، ۲/۴۱۳، الحدیث:۳۳۳۲)

सवाल:इल्मुल जनीन के मुताअल्लिक़ जदीद साइंस क्या कहती है?

जवाब:जिस बात को क़ुरआन ने बयान किया बिल्कुल वही बात जदीद मेडीकल साइंस भी कहती है।

सवाल:बच्चा बनने की इब्तिदा के मुताअल्लिक़ इस्लाम क्या कहता है?

जवाब:इल्मे हयातियात की इस्तिलाह में मर्द व औरत के नुतफ़ों के मिलने को फ़र्टीलायज़ीशन या बार आवरी कहते हैं।इस अमल में मर्दाना तौलीदी

जरसूमा औरत के बैज़ा से मिल कर उसे बार आवर Fertilized) कराता है जो बच्चा बनने का इब्तिदाई मरहला है।पारा 29,सूरह अद दहर में इरशादे रब्बानी है:

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ .(پ۲۹،الدہر،۲)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मिनी से।

इस आयत के तहत अल्लामा तिबरी(رضی اللہ عنہ) फ़रमाते हैं:"जब मर्दो औरत के नुतफ़े बाहम मिल जाएं तो उस को अमशाज कहते हैं।

(الطبری، محمد بن جریر، جامع البیان فی تاویل آی القرآن، مؤسسۃ الرسالۃ، بیروت، ۱۹۹۷ء، ۲۴:۵۲۸)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी (رضی اللہ عنہ)लिखते हैं:"जब आदमी की मनी औरत की मनी से मिलती है और अल्लाह पाक उस से जनीन बनाने का इरादा रखता हो तो उस के लिए अस्बाब मुहय्या कर देता है।औरत के रहम में दो क़ुव्वतें होती हैं,एक क़ुव्वत इनबिसात(यानी फैलने की सलाहिय्यत जो मनी के दाख़िल होने के वक़्त होती है जिसकी वजह से मनी उस में फैल जाती है। दूसरी क़ुव्वत रहम में इनकिबाज़(यानी रोके रखने की क़ुव्वत)है कि मनी जब अन्दर चली जाती है तो बावजूद इस के कि रहम उल्टा है,मनी उस से बाहर नहीं बेहती। इलावा अज़ीं आदमी की मनी में"क़ुव्वते फ़ेअलियत"जबकि औरत की मनी में "क़ुव्वते इनफ़िआलियत"होती है।

शम्सुद्दीन इब्नुल कय्यिम (رضی اللہ عنہ)ने ज़िक्र किया है कि रहम का दाख़िली हिस्सा स्पंज जैसा मुलाइम है और उस में मनी क़बूल करने की सलाहिय्यत पैदा कर दी जाती है, जिस तरह कि प्यासे को पानी की तलब रहती है और रहम उस को धकेलता नहीं बल्कि उसे मिला देता है ताकि इस में फ़साद ना आए। फिर अल्लाह पाक रहम के फ़िरिश्ते क़ो उस के बनाने और पुख़्ता करने का हुक्म देता है, फिर चालीस दिन में इस की ख़िलक़त जमा की जाती है।

(ابن حجر، احمد بن علی، فتح الباری شرح صحیح البخاری، دارالفکر، بیروت، س۔ن، ۱۳:۳۱۱)

सवाल:बच्चा बनने की इब्तिदा के मुताअल्लिक़ जदीद मेडीकल साइंस क्या कहती है?

जवाब:बच्चा बनने की इब्तिदा के मुताअल्लिक़ साइंस ये कहती है कि बार आवरी Fertilization) का अमल नाली के वसीअ हिस्सा में, जो बैज़ा दानी (Ovary) से मुत्तसिल है,अमल पज़ीर होता है। नर और मादा जिन्सी जरसोमे तौलीदी नाली में ज़्यादा से ज़्यादा चौबीस घंटे तक ज़िंदा रह सकते हैं। नर व मादा तौलीदी अन्दाम नहानी के रास्ते रहम(Uterus)के अंदर पहुंच जाते हैं और फिर आख़िर कार बैज़ा दानी की नालियों में भी पहुंच जाते हैं। स्पर्म की हरकत बैज़ा दानी की नालियों(UterineTube)के अज़लात(Muscles)के सुकड़ने और फैलने की वजह से होती है। बार आवरी के अमल में दो सौ से तीन सौ मिलियन तक नर तौलीदी जरसोमे अंदाम नहानी में दाख़िल हो जाते हैं जिनमें से सिर्फ तीन सौ से पाँच सौ तक बार आवरी होने के महल में पहुंच जाते हैं लेकिन इस अमल की अंजाम दही के लिए सिर्फ एक स्पर्म की ज़रूरत होती है। मादा जिन्सी जरसूमा(यानी अंडा)के इर्द गिर्द ख़लयात की एक तह होती है जिसकोFollicular Cells) कहा जाता है, इस में नर जिन्सी जरसूमे ख़ुद को अंदरूनी तरफ़ धकेल देते हैं। इस मक़ाम पर कई स्पर्म बैज़े के अंदर जाने की कोशिश में लगे रहते हैं गोया उन में से जो भी स्पर्म कामयाब हो कर बैज़ा के अंदर नुफ़ूज़ कर जाये तो इस से एक ख़ास किस्म का ख़ामरह ख़ारिज करता है जिसको"लाइसोसोम"कहते हैं जो बैज़ा की ख़ुसूसीयात में तब्दीली का बाइस बनते हैं। बैज़ा और स्पर्म जब बाहम मिलते हैं तो उन की झिल्लियां बाहम मिल जाती हैं,इन्सानों में स्पर्म का सिरा और दुम दोनों बैज़ा के अंदरूनी माए(Cytoplasm) में दाख़िल हो जाते हैं,लेकिन उस की झिल्ली (Plasma Membrane)बाहर बैज़ा की सतह पर रह जाती है।

हमल का पहला हफ़्ता

पहले हफ़्ते में जनीन (यानी बच्चा)के मराहिल क़ा लुब्बे लुबाब ये है कि बार आवरी होने के बाद ज़ाएगोट में तक़सीम का अमल शुरू हो जाता है,फिर नए ख़लीए बनते हैं।इस मरहले को ब्लास्टोलेशन कहते हैं।फिर मां के रहम में क़रार पाने के लिए ये रहमे मादर के अंदरूनी हिस्सा को चीर कर महफ़ूज़ हो जाता है। ब्लास्टोला के मरहले में ख़लियों के गिर्द एक बारीक तह होती है जिस को

टुरूफ़ोब्लास्ट कहते हैं,ये हमल के इस्तिक़रार में मदद देती है।बाद में इस तह से एक झिल्ली बन जाती है जिसको कारियान(Chorion) से मौसूम करते हैं।क़ुरआने करीम में रहम में महफ़ूज़ होने के इस मरहले की तस्वीर कशी यूं की गई है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿۱۳﴾

(پ۱۸،المؤمنون،۱۲۔۱۳)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया।फिर उसे पानी की बूँद किया एक मज़बूत ठहराव में।

हमल का दूसरा हफ़्ता

दूसरे हफ़्ते में ख़लियों की तीन तह (Layers) बनना शुरू हो जाती हैं। इस मरहले को(Gastrulaion) से मौसूम करते हैं। इस मरहला में तीन तह(Layers) बैरूनी तह(Endoderm)दरमियानी तह(Mesoderm)और अंदरूनी तह (Endoderm)बन जाती हैं। बैरूनी तह से चमड़ा(Skin)और आसाबी निज़ाम(Nervous System) बनते हैं। दरमियानी तह से बाफ़्तें (Muscles) और दूसरे अंदरूनी आज़ा बनते हैं।

हमल का तीसरे हफ़्ता से चालीस दिन तक

जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक़ तीसरे हफ़्ते में दो अहम आज़ा का बनना शुरू हो जाता है। पहला आसाबी निज़ाम ज़ाहिर हो जाता है और फिर बाद में दिल बनना शुरू हो जाता है जो कि चौथे हफ़्ते में दाख़िल हो जाता है।सबसे पहले दिल की सिर्फ दो नालियां बनती हैं।ये दो नालियां जब मुकम्मल हो जाती हैं तो दिल धड़कना शुरू हो जाता है। छठे हफ़्ते तक दिल,आसाबी निज़ाम,ख़ून की नालियां और आनोलUmbilical Cord)) बन जाती हैं।आनोल माँ और बच्चे के दरमियान ग़िज़ाई मवाद और फ़ाज़िल माद्दो के तबादले का एक मुनज़्ज़म ज़रिया है।चालीसवें दिन तक जनीन के कान,नाक और आँखों के निशानात वाज़ेह हो जाते हैं।जनीन की लंबाई8मिली मीटर होती है और इस का दिल फ़ी मिनट100से130 मर्तबा धड़कता है, मज़ीद बरआँ उस की दिमाग़ की लहरें भी नज़र आती हैं।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी (رضی اللہ عنہ)ने लिखा है:"वो(यानी अतिब्बा)कहते हैं कि जब मनी रहम में चली जाती है और रहम उस को बाहर फेंक ना दे तो नुतफ़ा अपने आप से दायरा बना लेता है और सख़्त हो जाता है।छः दिन के इख़्तिताम तक फिर उस में दिल,दिमाग़ और जिगर की जगहों में तीन नुक़्ते ज़ाहिर हो जाते हैं। अगले तीन दिन के इख़्तिताम तक उस में रगें(ख़ून)नुफ़ूज़ कर जाती हैं और तीनों आज़ा मुताहय्यज़ हो जाते हैं।फिर अगले बारह दिनों के इख़तिताम तक मग़ज़ की रूतूबत में इमतिदाद आ जाता है जिससे अगले नौ दिनों में दोनों शानों से सर जुदा हो जाता है और इसी तरह पसलियाँ,पेट वग़ैरा भी ज़ाहिर हो जाते हैं। अगले चार दिनों में ये तमीज़ात मुकम्मल हो जाती हैं और नबी अकरमﷺ के इस क़ौल (चालीस दिनों में इस की ख़िलक़त जमा की जाती है) का यही मतलब है।(ابن حجر، فتح الباری،۱۷:۳۱۳)

जिन्स के ताअय्युन में मर्द के नुतफ़े का किरदार

इल्मुल जनीन की जदीद तहक़ीक़ात से साबित हो चुका है कि जिन्स के ताअय्युन का तमाम तर दारो मदार मर्द के नुतफ़ा पर होता है क्योंकि इस में दो किस्म के क्रोमोसोम होते हैं X" औरY" इस में अहम Y"क्रोमोसोम है जो नर जिन्स में बाप की तरफ़ से आता है।मादा जिन्स का ताअय्युन X"क्रोमोसोम्ज़ से होता है।औरत के नुतफ़े में दोनों क्रोमोसोम्ज़ X" ही होते हैं। अगर मर्द की तरफ़ से X"क्रोमोसोम आगे हो जाए तो फिर जिन्सी क्रोमोसोम्ज़ का मजमूआ XX"हो जाता है जो मादा का ताअय्युन करता है यानी पैदा होने वाला जनीन लड़की होगी और अगर मर्द के नुतफ़े से Y" क्रोमोसोम सबक़त कर ले तो फिर बच्चा"नर"होगा

इस तकनीक की तरफ़ हदीस में भी इशारा हुआ है:"हज़रत सौबान(رضی اللہ عنہ)से रिवायत है कि मैं नबीए अकरमﷺ के पास खड़ा था। कि नबीए अकरमﷺने फ़रमाया: कि आदमी का पानी सफ़ेद होता है और औरत का पानी ज़र्द (रंग का) होता है। जब ये दोनों जमा हो जाएं और औरत की मनी पर आदमी की मनी चढ़ जाये (यानी ग़ालिब आ जाए)तो अल्लाह पाक के हुक्म से मुज़क्कर (यानी

लड़का)बन जाता है और जब औरत की मनी आदमी की मनी पर ग़ालिब आ जाए तो वो अल्लाह पाक के हुक्म से मोअन्नस(यानी लड़की)बन जाती है।

(امام مسلم،ابوالحسن،بن الحجاج القشیری،الصحیح المسلم،قدیمی کتب خانہ،کراچی،س۔ن،۱۴۶:۱)

दीगर अहादीस में इस तकनीक के मुताअल्लिक़ दो किस्म के अलफ़ाज़ वारिद हैं एक "सबक़ और दूसरा "उलुव्व"। जिस हदीस में "सबक़ का लफ़्ज़ आया है इस से मुराद यह है कि मर्दाना नुतफ़ा के सबक़त की सूरत में लड़का पैदा होगा जबकि ज़नाना नुतफ़ा के सबक़त की सूरत में लड़की पैदा होगी।(ابن حجر،فتح الباری،۲۹۳:۷)

अल हासिल मर्दाना नुतफ़ाY"क्रोमोसोम की सबक़त के नतीजे में लड़का जब कि ज़नाना नुतफ़ा यानी X" क्रोमोसोम की सबक़त के नतीजे में लड़की पैदा होगी। जब कि "उलुव्व का मतलब ये है कि जिस का नुतफ़ा ग़ालिब आए बच्चे की शक्लो सूरत उस के जैसी होगी।

अलका के मरहले में जनीन की हफ़्ता वार नशोनुमा

पारा 30,सूरह-ए-अलक़ में इरशाद रब्बानी है:

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱)(پ۳۰،العلق،۱۔۲)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ(۲)(پ۳۰،العلق،۲)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:आदमी को ख़ून के लोथड़े से बनाया।

इस आयत में लफ़्ज़ "अलक़ इस्तिमाल हुआहै जिसका मअना है,जमे हुए ख़ून का लोथड़ा,या ख़ून चूसने वाली चीज़ यानी जोंक (Leech)-इस आयत और इस के मुताअल्लिक़ा दूसरी आयात पर प्रोफ़ैसर कैथ मोर ने तहक़ीक़ की और कहा कि क़ुरआन और अहादीस की बयान करदा मालूमात का ज़्यादा तर हिस्सा जदीद साइंसी मालूमात के ऐन मुताबिक़ है और इस में बिल्कुल कोई टकराव नहीं पाया जाता। "अलका"के मरहले के दौरान इन्सानी जनीन जोंक के मुशाबेह होता है, क्योंकि इस मरहला में इन्सानी जनीन अपनी ख़ुराक माँ के ख़ून से हासिल करता है।(Victor Olu Taiwo, World Terrorism Diagnosis and Path to Global Peace, (2014), p:133)

इमाम राग़िब अस्फ़हानी फ़रमाते हैं:"अल अलक"के माना किसी चीज़ में फंस जाने के हैं, कहा जाता है "अलकुस्सैदि फिल हबालती यानी शिकार जाल में फंस गया। "अल अलक"(जोंक)एक किस्म का कीड़ा जो हलक़ के साथ वाबस्ता हो जाता है,नीज़ जमे हुए ख़ून और लोथड़े की किस्म के ख़ून को "अलक कहा जाता है जिससे बच्चा बनता है।और "अल इलक (ऐन के कसरा के साथ)उस उम्दा चीज़ को कहा जाता है जिसके साथ मालिक का दिल चिमटा हुआ हो और इस की मुहब्बत दिल से उतरती ना हो।

(الراغب، حسین بن المفضل، مفردات الفاظ القرآن، دارالقلم، دمشق، س۔ن، ص:۵۷۹)

ऊपर बयान किए गए मअना पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि अलका वो चीज़ है जो मज़बूती के साथ किसी चीज़ से चिमटी हुई हो और जनीन भी अलका के मरहले में रहमे मादर के साथ चिमटा हुआ होता है और बिलकुल एक जोंक की तरह वो रहमे मादर से ख़ून हासिल करता है।

हमल का तीसरा मरहला 40 दिन से 80 दिन तक होता है इस में जनीन12 मिली मीटर से बढ़कर 6 सेनटी मीटर तक नशो नुमा पाता है।इस चिल्ले में मुख़्तलिफ़ आज़ा फेफड़े,सांस की नाली,उंगलियों के नाख़ुन,दाँत निकलने की जगहें वग़ैरा बन जाते हैं।जनीन का सर इस मरहले की इब्तिदा में बहुत बड़ा होता है लेकिन इख़्तिताम तक साइज़ में छोटा हो जाता है। उल-ग़र्ज़ इस मरहले के इख़्तिताम तक तमाम आज़ा तक़रीबन मुकम्मल हो चुके होते हैं,वो पेशाब भी कर सकता है,लात भी मार सकता है और अँगूठा भी चूस सकता है।

(Keith L Moore, The Developing Human, (South Asian: 8th Edition), p:96.)

मुदग़ा ग़ैर मुख़ल्लका का मरहला

रहमे मादर में इन्सान की ख़िलक़त का तीसरा मरहला मुदग़ा ग़ैर मुख़ल्लका है।इरशादे रब्बानी है:

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ (۱۴) (پ۱۸، المؤمنون، ۱۴)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान: फिर हमने उस पानी की बूँद को ख़ून का लोथड़ा किया फिर ख़ून के लोथड़े को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर इन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बेहतर बनाने वाला है।

इसी तरह पारा 17,सूरह-ए-हज में इरशादे रब्बानी है:

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى (پ۱۷،الحج،۵)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:ऐ लोगो अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो ये ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर पानी की बूँद से फिर ख़ून के लोथड़े से फिर गोश्त की बोटी से नक़्शा बनी और बे बनी ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक मुक़र्रर मीआद तक।

अल्लामा कुरतुबी इस आयत के तहत मुदग़ा ग़ैर मुख़ल्लका के बारे में लिखते हैं:

"इस आयत में बतने मादर के अंदर इन्सान की तख़लीक़ के मुख़्तलिफ़ दर्जात का बयान है।इस की तफ़सील सही बुख़ारी की एक हदीस में है,जो हज़रत अब्दुल्लाह इबने मसऊद(رضی اللہ عنہ)से रिवायत है कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया:और वह सच बोलने वाले और सच्चे समझे जाने वाले है: कि इन्सान का माद्दा चालीस रोज़ तक रहम में जमा रहता है,फिर चालीस दिन के बाद अलका यानी जमा ख़ून बन जाता है,फिर चालीस ही दिन में वो मुदग़ा यानी गोश्त बन जाता है।इस के बाद अल्लाह पाक की तरफ़ से एक फ़िरिश्ता भेजा जाता है जो उस में रूह फूंक देता है और उस के मुताअल्लिक़ चार बातें उसी वक़्त फ़िरिश्ते को लिखवा दी जाती हैं। अव्वल ये कि इस की उम्र कितनी है? दूसरी रिज़्क़ कितना है?

तीसरी अमल क्या करेगा?चौथी ये कि ये शक़ी-व-बद-बख़्त होगा या सईद।(تفسیر قرطبی،۴:۱۲)

बयान की हुई हदीस से येह तफ़सीर मालूम हुई कि जिस नुतफ़ए इन्सानी का पैदा होना मुक़द्दर होता है वो मुख़ल्लका है और जिस का पैदा होना मुक़द्दर ना हो और साक़ित हो जाना मुक़द्दर है वो ग़ैर मुख़ल्लका है।और बाज़ मुफ़स्सिरीन मुख़ल्लका और ग़ैर मुख़ल्लक़ा की तफ़सीर ये करते हैं कि जिस बच्चे की तख़लीक़ मुकम्मल और ताम हो,आज़ा सही सालिम और मुतनासिब हों वो मुख़ल्लका है और जिस के बाज़ आज़ा नाक़िस हों या कद और रंग वग़ैरा ग़ैर मुतनासिब हों वह ग़ैर मुख़ल्लका है।

कुरानी आयात,तफ़ासीर और अहादीस पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि मुदग़ा ग़ैर मुख़ल्लका का मरहला अलका और मुदग़ा मुख़ल्लका के दरमियानी अरसा पर मुहीत मरहला है जो चालीस दिन से शुरू हो कर दूसरे चिल्ले यानी80दिन तक रहता है और दूसरे चिल्ले के इख़तिताम पर मुदग़ा मुख़ल्लका बन जाता है।

मुदग़ा मुख़ल्लका का मरहला

मुदग़ा मुख़ल्लका तख़लीक़ के मराहिल का चौथा मरहला है। मुदग़ा की बाज़ तफ़सीलात तो गुज़िश्ता सुतूर में बयान हो चुकी हैं। आगे इस पर मज़ीद रोशनी डाली जाएगी। अल्लामा राग़िब अस्फ़हानी (साले वफ़ात:445हिजरी) लिखते हैं:"मुदग़ा गोश्त के छोटे से टुकड़े को कहा जाता है जो चबाने के लिए मुँह में डाला जा सके। (الاصفہانی، مفردات الفاظ القرآن، ص:۷۷۰)

तीसरे चिल्ले का आग़ाज़80दिन के बाद होता है और120दिन तक जारी रहता है।इस मरहले में जनीन8 सेनटी मीटर से18सेनटी मीटर तक नशो नुमा पाता है।वह हरकत करता है लेकिन वो इतना छोटा होता है कि हामिला उस की हरकत महसूस नहीं करती।वह नाफ़ की डोरी के ज़रिए ऑक्सीजन ले कर सांस लेता है।उस की हड्डियां सख़्त हो रही होती हैं और जिल्द पर बाल निकलने लगते हैं।इस मरहले में हामिला का दिल40 से50 गुना ज़्यादा काम करता है

(The Developing Human, p:98)

जनीनी नशो नुमा और रूह का पड़ना

चार माह (यानी120)दिन में मुदग़ा मुख़ल्लका तकमील को पहुंच जाता है,बच्चा जसामत में भी काफ़ी हद तक बड़ा होता है,आज़ा भी मुकम्मल होते हैं और वह मुकम्मल तौर पर हरकत करने के काबिल भी होता है और तमाम आज़ा भी काम करने के काबिल बन जाते हैं।अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी फ़रमाते हैं:"अतिब्बा कहते हैं कि 80दिन की मुद्दत में जनीन में हरकत आ जाती है,फ़िर इसी तरह मुदग़ा बन जाता है यानी छोटा सा गोश्त का टुकड़ा और ये तीसरे चिल्ले में हुआ करता है जो हरकत करती है। उल्मा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जनीन में रूह चौथे महीने में पड़ जाती है, इस से पहले नहीं।"(ابن حجر، فتح الباری، ۱۳:۳۱۷)

"अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की हदीस से मालूम होता है कि नुतफ़ा, अलका, मुदग़ा में से हर एक पर चालीस दिन गुज़रते हैं जिस से एक सौ बीस दिन बनते हैं फिर रूह फूंक दी जाती है।

हुज्जतुल इस्लाम,इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली (رضی اللہ عنہ)फ़रमाते हैं:एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं:एक फ़िरिश्ते को रूह कहा जाता है और यही फ़िरिश्ता जिस्म में रूह डालता है। ये अपने मख़सूस अंदाज़ पर सांस लेता है और हर सांस रूह बन कर जिस्म में दाख़िल हो जाती है,उसी वजह से इस का नाम रूह हो गया। इमामे ग़ज़ाली फ़रमाते हैं:इन बुज़ुर्ग ने जो कुछ इस फ़िरिश्ते के मुताअल्लिक़ फ़रमाया बिल्कुल दुरुस्त है कि अहले कश्फ नूरे बसीरत से उसे देख लेते हैं। बहरे हाल इस फ़िरिश्ते को"रूह"कहने का सुबूत क़ुरआनो हदीस से ही मुम्किन है वर्ना यह महेज़ तख़मीना(यानी अन्दाज़ा)है।(احیاء العلوم ج۴، ص ۷۷۲)

अल्लामा इब्ने हजर(رضی اللہ عنہ) बुख़ारी शरीफ़ की शरह फ़तहुलबारी में लिखते हैं:"हज़रते अली बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि जब नुतफ़ा पर 120 दिन गुज़र जाएं तो अल्लाह पाक एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाता है जो उस में रूह फूंक देता है।"(فتح الباری ج ۱۱، ص ۴۸۶)

रूह पड़ने के बाद बच्चे की हफ़्ता वार नशो नुमा

इस मरहले पर जनीन19सेनटी मीटर से51सेनटी मीटर तक बढ़ जाता है और पैदाइश के वक़्त बच्चों का औसतन वज़न3.36 किलोग्राम होता है।इस मरहले में बच्चे के हवासे ख़मसा बहुत हस्सास होते हैं। वह ज़ायक़ा महसूस करता है,आवाज़ों को पहचान सकता है,दिमाग़ में तहरीक आती है और बच्चे के सीखने की सलाहियत में निखार आता है।इस मौक़ा पर माएं बच्चे की हरकत और लात मारना ज़्यादा महसूस करती हैं।अब बच्चा200 मिलियन ख़लियों वाला इन्सान बन चुका है।हमल के आख़िर में3से4फ़ीसद बच्चे उल्टी पोज़ीशन में होते हैं और सिर्फ50फ़ीसद बच्चे मुतावक़्क़े तारीख़ पर पैदा होते हैं जबकि हर पाँच में से चौथा बच्चा ताख़ीर से पैदा होता है लेकिन ये फ़िक्रमंदी की बात नहीं।

सवाल:रहम में बच्चे की कैसी हालत होती है?

जवाब:बच्चे की ठोढ़ी उस के घुटनों पर रखी होती है और दोनों हाथ चेहरे पर रखे होते हैं,बच्चा मशीमा नाम की झिल्ली में लिपटा होता है।फ़लसफ़ी कहते हैं :"माँ के रहम में लड़की का चेहरा अपनी माँ के चेहरे की तरफ़ होता है और लड़के का चेहरा माँ की कमर की तरफ़ होता है"(فردوس الحکمت ص ۴۴)

जबकि बहारे शरीअत में है:' ज़िम्मिया औरत को मुसलमान का हमल था और वह मर गई अगर बच्चे में जान पड़ गई थी तो उसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान से अलैहिदा दफ़न करें और उस की पीठ क़िब्ला को कर दें कि बच्चे का मुँह क़िब्ला को हो, इसलिए कि बच्चा जब पेट में होता है तो उस का मुँह माँ की पीठ की तरफ़ होता है।(بہار شریعت ج۱، ص۸۱۲)

सवाल:कौन से महीने में पैदा होने वाला बच्चा ज़िंदा रहता है?

जवाब:क़दीम अतिब्बा का कहना है "जो बच्चा सातवें या नवें माह में पैदा होगा तो ज़िंदा रहेगा,आठवें माह का ज़िंदा नही रहता।इस की ये वजह है कि आदाद में ताक़ अदद अफ़ज़ल है और वो अदद भी अफ़ज़ल है जो ताक़ से मिलकर बने मसलन 9 का अदद ,तीन को तीन बार मिला कर बनाते हैं,और 7 का अदद,दो बार तीन तीन और एक से मिलकर बना है"।(فردوس الحکمت ص ۴۵)

सवाल:रहम में लड़का है या लड़की इस की पहचान कैसे होगी?

जवाब:इस की पहचान के लिए क़दीम अतिब्बा ने कई तरीक़े बयान किए हैं उनमें से चंद ये है:

(1)**---** अगर लड़का रहम में होगा तो हामिला औरत के रहम और छाती में हरकत होती है।(فردوس الحکمت ص ۴۷)

(2)**---** हामिला औरत अगर खड़ी है उस को बुलाया जाये तो वो चलने के लिए दाहिना क़दम पहले उठाए तो उस के हमल में लड़का है, अगर बायां क़दम पहले उठा कर चले तो लड़की है।(فردوس الحکمت ص ۴۷)

(3)**---** अगर दौराने हमल हामिला का रंग निखर जाये तो लड़का पैदा होगा और अगर ना निखरे बल्कि ख़राब हो जाये तो लड़की पैदा होगी, क्योंकि लड़का गर्म मिज़ाज होता है और गर्मी में रंग निखरता है जबकि लड़की सर्द मिज़ाज होती है और सर्दी में रंग ख़राब सब्ज़ी माइल होता है।(فردوس الحکمت ص ۴۸)

(4)**---** अगर औरत की दाहिनी आँख और रहम के दाहिनी तरफ़ बोझ महसूस हो तो लड़का पैदा होगा, और अगर बोझ रहम और आँख में बाएं जानिब हो तो लड़की पैदा होगी।(فردوس الحکمت ص ۴۸)

बच्चे की पैदाइश

सवाल:रहम से बच्चे की पैदाइश कैसे होती है?

जवाब:जब बच्चे की तख़लीक़ मुकम्मल हो जाती है तो रहमे मादर की ग़िज़ा उस बच्चे के लिए नाकाफ़ी होती है,हुसूले ग़िज़ा के लिए बच्चा हाथ पांव चलाता है तो परदए सफ़ाक फट जाता है जिस की वजह से औरत की शर्मगाह से रूतूबत ख़ारिज होने लगती है,और इसी दरमियान बच्चा उल्टा हो जाता है इसी लिए बच्चा सर के बल पैदा होता है क्योंकि बच्चे का सर की तरफ़ का जिस्म पांव की तरफ़ के जिस्म से भारी होता है और इसी हालत में बच्चे की विलादत हो जाती है।(فردوس الحکمت ص ۴۴)

बच्चा जब तख़लीक़ के मराहिल मुकम्मल करके रहमे मादर से बाहर आने के काबिल हो जाए तो अल्लाह पाक की तरफ़ से उस के दुनिया में आने का जो वक़्त मुक़र्रर है उस वक़्त वो पैदा हो जाता है जैसे कि इरशादे रब्बानी है:

وَ نُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا (پ۱۷،الحج،۵)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान: और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक मुक़र्रर मीआद तक फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा।

एक और जगह इरशाद है:

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ (۱۹) ثُمَّ السَّبِیْلَ یَسَّرَهٗ (۲۰) (پ۳۰،عبس،۲۰-۱۹)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:पानी की बूँद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अंदाज़ों पर रखा।फिर उसे रास्ता आसान किया।

इन दो आयतों में अल्लाह पाक ने इन्सान की तख़लीक़,उस की ज़िंदगी के मराहिल और उस पर अपने इनआमात बयान फ़रमाया कि उसने इन्सान को माँ के पेट में कुछ अरसा नुतफ़े की शक्ल में, कुछ अरसा जमे हुए ख़ून की सूरत में और कुछ अरसा गोश्त के टुकड़े की शान में रखा,फिर उस के हाथ ,पांव आँखें और दीगर अअज़ा बनाए यहां तक कि उसे इन्सानी सूरत का जामा पहना दिया। फिर उस के लिए माँ के पेट से पैदा होने का रास्ता आसान दिया।

(تفسیر صراط الجنان ج۱۰، ص۵۲۶)

सवाल:हमल को कब तक गिरा सकते हैं?

जवाब:इसक़ाते हमल यानी हमल को गिराने के ताअल्लुक़ से सदरूश्शरिआ,बदरूत्तरिका,मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी बहारे शरीअत में लिखते हैं:"इसकाते हमल के लिए दवा इस्तिमाल करना या दाई से हमल साक़ित कराना(यानी गिराना)मना है। बच्चे की सूरत बनी हो या ना बनी हो दोनों का एक हुक्म है, हाँ अगर उज़्र हो मसलन औरत के शीर ख़ार बच्चा है और बाप के पास इतना माल नहीं कि दाया मुक़र्रर करे या दाया दस्तयाब नहीं होती और हमल से दूध ख़ुश्क हो जाएगा और बच्चे के हलाक होने का अंदेशा है तो इस मजबूरी से

हमल साक़ित किया जा सकता है, बशर्ते कि उस के आज़ा ना बने हों और इस की मुद्दत एक सौ बीस दिन है। (بہار شریعت ج۳، ص۵۰۷، مطبوعہ مکتبۃ المدینہ دعوتِ اسلامی)

सवाल:बच्चे और बच्ची को माँ कब तक दूध पिला सकती है?

जवाब:दूध पीने वाला लड़का हो या लड़की हिजरी साल के ऐतिबार से दो साल की उम्र तक दूध पिलाया जाये उस के बाद अगर पिलाएगें तो ना जाइज़ो गुनाह होगा जैसा कि पारा 2, सूरतुल बक़रा की आयत नंबर 233 में इरशाद हुआः

وَ الْوَالِدٰتُ یُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَیْنِ كَامِلَیْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ یُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:और माएं दूध पिलाऐं अपने बच्चों को पूरे दो बरस उस के लिए जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे।(پ۲، البقرۃ:۲۳۳)

और यह जो बाज़ अवाम में मशहूर है कि लड़की को दो बरस तक और लड़के को ढाई बरस तक पिला सकते हैं इस का कोई सबूत नहीं, ग़लत बात है। याद रहे कि दूध पिलाने के जाइज़ होने की मुद्दत तो दो साल ही है अलबत्ता अगर कोई औरत दो साल के बाद भी ढाई साल के अंदर अंदर किसी बच्चे को दूध पिला दे तो हुरमते रज़ाअत(यानी दूध का रिश्ता) साबित होजाता है

(زندہ بیٹی کنویں میں پھینک دی ص ۳۱)

सवाल:बच्चा कितनी झिल्लियों में होता है?इस्लाम और साइंस की रोशनी में बयान करें?

जवाब:प्रोफ़ैसर डाक्टर कैथ मोर की तहक़ीक़ के मुताबिक़ बच्चा तीन झिल्लियों में लिपटा हुआ होता है:(1)शिकम मादर की अगली दीवार।(2)रहमे मादर की दीवार।(3)गिलाफ़े जनीन और इस के गिर्द लिपटी हुई झिल्ली amnio-chorionic membrane)

जबकि इस बारे में कुराने पाक 1400 साल पहले ही बयान फ़रमा चुका है चुनांचे पारा 23 सूरतुज़्ज़ुमर की आयत नंबर 6 में इरशाद हुआः

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِیَةَ اَزْوَاجٍ ؕ یَخْلُقُكُمْ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِیْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:उसने तुम्हें एक जान से बनाया फिर उसी से उस का जोड़ पैदा किया और तुम्हारे लिए चौपायों से आठ जोड़े उतारे तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और तरह तीन अँधेरियों में।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है तीन अंधेरों से मुराद पेट,बच्चा दानी और उस की झिल्ली का अंधेरा है और एक हालत के बाद दूसरी हालत की तख़्लीक़ से मुराद ये है कि पहले नुतफ़ा,फिर जमे हुए ख़ून,फिर गोश्त के टुकड़े और फिर मुकम्मल बच्चे की तख़लीक़ होती है।(تفسیرِ صراط الجنان،،ج۸،ص۴۳۲)

सवाल:मर्द और औरत की मनी जिस्म के किस हिस्से में होती है? इस्लाम और साइंस की रोशनी में बयान करें?

जवाब:इस के मुताअल्लिक़ साइंस ये कहती है कि जनीनी मराहिल (embryonic stages) में मर्दाना व ज़नाना तौलीदी आअज़ा यानी फोते (testicle) और बैज़ा दान(Ovary) गुर्दों के पास से रीढ़ की हड्डी और ग्यारहवीं और बारहवीं पसलियों के दरमयान से नुमू पज़ीर(यानी पैदा) होना शुरू होता हैं। इस के बाद वो कुछ नीचे उतर आते हैं, तौलीदी ग़ुदूद(gonads) यानी बैज़ा दान पेड़ू (pelvis) में रुक जाती है जबकि मर्दाना आअज़ाए-तौलीद(inguinal canal) के रास्ते ख़ुसिया दानी(scrotum) तक जा पहुंचते हैं। यहां तक कि बलूग़त में भी जबकि तौलीदी ग़ुदूद के नीचे जाने का अमल रुक चुका होता है इन ग़ुदूद में धड़ वाली बड़ी रग(Abdominal aorta) के ज़रीये ख़ून और आसाब की रसानी का सिल्सिला जारी रहता है। ध्यान रहे कि धड़ वाली बड़ी रग उस इलाक़े में होती है जो रीढ़ की हड्डी और पसलियों के दरमयान होता है। लमफ़ी निकास (Lymphetic drainage) और ख़ून का वरीदी बहाव भी इसी सिम्त होता है।

इस के मुताल्लिक़ क़ुराने पाक के पारा 30 सूरतुत्तारिक़ की आयत नंबर 5,6,7 में फ़रमाया गया:

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ(۵) خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ(۶) يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَ التَّرَآئِبِ(۷)(پ۳۰،الطارق،۵۔۶۔۷)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान:तो चाहिए कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया उछलते हुए पानी से जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से।

इन आयात के मुताल्लिक़ तफ़सीरे सिरातुल जिनान में है:नुतफ़ा मर्दों की पीठ और औरतों के सीनों के दर्मियान से निकलता है।हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि ये पानी औरत के सीने के उस मक़ाम से निकलता है जहां हार पहना जाता है और इन्हीं से मन्क़ूल है कि औरत की दोनों छातियों के दर्मियान से निकलता है। ये भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम अअज़ा से बरामद होती है और इस का ज़्यादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी उन रगों में से आता है जो सीने के मक़ाम पर हैं,इसी लिए यहां इन दोनों मक़ामात का ज़िक्र ख़ुसूसीयत से फ़रमाया गया।(تفسیر صراط الجنان، ج۱۰، ص۱۰۵)

सवाल:कहते हैं कि बेटी की पैदाइश पर मुबारक बाद नहीं देनी चाहीए, क्या ये सही है?

जवाब: बेटी की पैदाइश पर मुबारक बाद देना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है, लेकिन बेटी की विलादत को बोझ या बुरा समझ कर मुबारक बाद ना देना बड़ी कम नसीबी है। बेटी अल्लाह पाक की रहमत है और अहादीसे करीमा में बेटी को बुरा ना समझने का हुक्म है, जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि (बेटियों को बुरा मत कहो,)मैं भी बेटियों वाला हूँ।(فردوس الأخبار، ۲/۴۱۵، حدیث:۷۵۵۶)

बाज़ अंबियाए किराम की औलाद की तादाद

तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"में पारा25सूरतुश्शूरा की आयत नंबर50के इस हिस्से(जिसे चाहे बाँझ कर दे) के तहत है:(यानी)' कि उस के औलाद ही ना हो,वो (यानी अल्लाह पाक)मालिक है,अपनी नेअमत को जिस तरह चाहे तक़सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अंबिया में भी ये सब सूरतें पाई जाती हैं, हज़रते लूत व हज़रते शुऐब(علیہما السلام) के सिर्फ बेटियां थीं, कोई बेटा ना था और हज़रते इब्राहीम (علیہ السلام)के सिर्फ फ़र्ज़ंद(यानी बेटे) थे,कोई दुख़्तर (यानी बेटी) हुई ही नहीं और हबीबे

ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा ﷺ को अल्लाह पाक ने तीन फ़र्ज़ंद अता फ़रमाए और चार साहिब ज़ादीयाँ।"(خزائن العرفان،پ۲۵،الشوری،۵۰)

बेटी की क़द्र कीजिए

ऐ आशिक़ाने रसूल!अगर अल्लाह पाक ने आपको बेटी जैसी रहमत से सरफ़राज़ फ़रमाया है तो उस की क़दर करें और इस के साथ साथ इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ उस की परवरिश भी करें नीज़ बा-हया और बा पर्दा बनाने की ख़ूब कोशिश करें कि आज के ना-गुफ़्ता बेह हालात में इस्लामी तालीमात से दूरी और ग़ैर मुस्लिमों की अंधी तक़लीद ने मुसलमानों को कहीं का नहीं छोड़ा, बद किस्मती से फ़ी ज़माना मुसलमानों के रहन सहन के तौर-तरीक़े और रूसूमात, इस्लामी तालीमात के सरासर ख़िलाफ़ नज़र आते हैं, ऐसे ना मुसाइद हालात में औलाद ख़ुसूसन बेटी की दुरुस्त इस्लामी तर्बीयत इंतिहाई मुश्किल नज़र आती है। लिहाज़ा अगर हम अपनी बेटी की सही तर्बीयत करना चाहते हैं तो सबसे पहले इस्लामी मालूमात हासिल करना ज़रूरी है ताकि इस्लामी तालीमात की रोशनी में हम सही माअनों में अपने इस फ़र्ज़े मंसबी की बजा आवरी कर सकें। क्योंकि आज की बेटी कल किसी की बीवी और बहू होगी, फिर माँ और बाद में सास बनेगी, लिहाज़ा आज इस बेटी की तर्बीयत पर भरपूर तवज्जोह देना ज़रूरी है ताकि कल जब ये ख़ुद किसी की माँ बने तो अपनी औलाद की बेहतरीन तर्बीयत से ग़फ़लत की मुर्तक़िब ना हो।

परवरिश के अनोखे अंदाज़

आईए!चंद ऐसे मदनी फूलों पर नज़र डालते हैं जो एक बेटी की परवरिश में बुनियादी हैसियत रखते है:

(1)--- कान में अज़ान देना

बेटी की पैदाइश पर ग़म-ज़दा होने के बजाए ख़ुशी का इज़हार करने के बाद सबसे पहला काम ये करना चाहिए कि उस के कानों में अल्लाह-व-रसूल की फ़रमांबर्दारी का पैग़ाम यानी अज़ान-व-इक़ामत की सूरत में पहुंचाया जाए ताकि

इस की रूह नूरे तौहीद से मुनव्वर और दिल इश्क़े मुस्तफ़ा की शमआ से फिरोज़ां (यानी रोशन)हो जाये। ऐसा करना मुस्तहब और सुन्नत से साबित है।

मेरे आक़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान (رضی اللہ عنہ)फ़रमाते हैं जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान बाएं(यानी उल्टे कान)में तकबीर कहें कि ख़लले शैतान और उम्मुस सिबयान जैसी बीमारी से बचे।(فتاوٰی رضویہ،۲۴/۴۵۲)

बेहतर ये है कि दाहिने(यानी सीधे)कान में चार मर्तबा अज़ान और बाएं (यानी उलटे कान) में तीन मर्तबा इक़ामत कही जाये। (अगर एक मर्तबा अज़ान-व-इक़ामत कह दी तब भी कोई हर्ज नहीं)सातवें दिन उस का नाम रखा जाये और उस का सर मूंडा जाये और सर मूंडाने के वक्त अक़ीक़ा किया जाये और बालों को वज़न करके उतनी चांदी या सोना सदक़ा किया जाये।बहुत लोगों में ये रिवाज है कि लड़का पैदा होता है तो अज़ान कही जाती है और लड़की पैदा होती है तो नहीं कहते।ये ना चाहिए बल्कि लड़की पैदा हो जब भी अज़ान-व-इक़ामत कही जाये।

(بہارِ شریعت،ج۳،ص۳۵۵)

(2)--- घुट्टी देना

तहनीक यानी घुट्टी देने के मुताअल्लिक़ हज़रत अबू ज़कारिया यहया बिन शरफ़ नववी शरह सहीह मुस्लिम में फ़रमाते हैं:तमाम उलमाए किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि बच्चा पैदा होने के बाद खजूर (या किसी मीठी चीज़)की घुट्टी देना मुस्तहब है,अगर खजूर ना हो तो जो भी मीठी चीज़ मयस्सर हो इस से घुट्टी दी जा सकती है। इस का तरीक़ा ये है कि घुट्टी देने वाला खजूर को अपने मुँह में ख़ूब चबा कर नर्म करे कि उसे निगला जा सके फिर वो बच्चे का मुहं खोल कर उस में रख दे। मुस्तहब ये है कि घुट्टी देने वाला नेक और मुत्तक़ी-व-परहेज़गार हो, ख़्वाह वो मर्द हो या औरत।अगर ऐसा कोई शख़्स पास मौजूद ना हो तो नौ मौलूद को तहनीक की ख़ातिर किसी नेक शख़्स के पास ले जाया जा सकता है।

(شرح صحیح مسلم،کتاب الادب،باب استحباب تحنیک المولود،الجزء الرابع عشر،۷/۱۲۲)

(3)--- अच्छा नाम रखना

माँ बाप की तरफ़ से चूँकि बच्चे के लिए सबसे पहला और बुनियादी तोहफ़ा ये होता है कि वो उस का ख़ूबसूरत और बा बरकत नाम रखें ताकि ये तोहफ़ा उम्र भर उसे माँ बाप की शफ़क़तों और मेहरबानियों की याद दिलाता रहे,यहां तक कि मैदाने महशर में भी अपने वालिदैन के अता कर्दा उसी नाम से बारगाहे ख़ुदावंदी में हाज़िरी के लिए बुलाया जाये। जैसा कि हज़रत अबूदर्दा (رضی اللہ عنہ)से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक,साहिबे लौलाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने बापों के नामों से पुकारे जाओगे,लिहाज़ा अच्छे नाम रखा करो।(ابوداود،کتاب الادب،باب فی تغیر الاسماء،۴/۳۷۴،حدیث:۴۹۴۸)

ऐ आशिक़ाने रसूल!मालूम हुआ बच्चों बिलख़ुसूस बेटियों के नाम रखने में इंतिहाई एहतियात से काम लेना चाहिए और उनका नाम ऐसा होना चाहिए कि दुनिया व आख़िरत में उन्हें कहीं शर्मसार ना होना पड़े,इसलिए कि बसा-औक़ात शरीअत के मसाइल से नावाक़िफ़ होने की वजह से लोग बेटियों के नाम मारूफ़ कुफ़्फ़ार औरतो के नाम पर रख देते हैं या नए नए नाम रखने की दौड़ में ऐसे नाम रख देते हैं जो बे माना होते हैं या उनका माना अच्छे नहीं होते,ऐसे तमाम नाम रखने से बचना चाहिए।जैसा कि बहारे शरीअत में है:ऐसा नाम रखना जिसका ज़िक्र ना क़ुराने मजीद में आया हो ना हदीसों में हो ना मुसलमानों में ऐसा नाम रखा जाता हो, इस में उलमा को इख़्तिलाफ है लिहाज़ा बेहतर यह है कि ना रखे।

(بہارِ شریعت،۳/۶۰۳)

लिहाज़ा चाहिए कि बेटियों के नाम उम्महातुल मुअमिनीन,सहाबियात-व-सालिहात के अस्माऐ मुबारका पर ही रखे जाएं।इस का एक फ़ायदा तो ये होगा कि आपकी बेटी का अल्लाह पाक की बर्गुज़ीदा-व-नेक ख़्वातीन से रूहानी ताअल्लुक़ क़ायम हो जाएगा और दूसरा उन नेक हस्तियों से मौसूम होने की बरकत से उस की ज़िन्दगी पर मदनी असरात मुरत्तब होगें। अगर आपने अपनी बेटी का नाम रखते वक़्त इन मदनी फूलों को मद्देनज़र नहीं रखा था तो परेशान मत हों बल्कि फ़ौरन उनका नाम बदल दीजिए।

(4)--- बाल मुंडवाना और अक़ीक़ा करना

सातवें दिन बाल मुंडवा कर उनके वज़न बराबर चांदी सदक़ा करना चाहिए,नीज़ अक़ीक़ा भी उसी दिन कर देना चाहिए। चुनांन्चे, आला हज़रत (رضی اللہ عنہ)फतावा रज़विया शरीफ़ में फ़रमाते हैं:सातवें और ना हो सके तो चौदहवें वर्ना इक्कीसवें दिन अक़ीक़ा करे,दुख़्तर (यानी बेटी)के लिए एक, पिसर(यानी बेटे)के लिए दो (बकरियां)कि इस में बच्चे का गोया रहन से छुड़ाना है। (فتاوٰی رضویہ،۲۴/۴۵۲)

(5)--- रिज़्क-ए-हलाल खिलाना

दौरे जदीद में महंगाई ने चूँकि हर कसो ना कस की कमर तोड़ कर रख दी है,लिहाज़ा ये बात आम देखी गई है कि ज़रूरीयात की तकमील और आसाइशों के हुसूल के लिए बसा-औक़ात हराम व हलाल कमाई की पर्वा नहीं की जाती और ये बात यकसर फ़रामोश कर दी जाती है कि हराम कमाई दुनिया व आख़िरत में अज़ीम ख़सारे का बाइस है। जैसा कि हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह(رضی اللہ عنہ)से मर्वी है कि शहनशाहे मदीना,करारे क़ल्बो सीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:वो गोश्त हरगिज़ जन्नत में दाख़िल ना होगा जो हराम में पला बढ़ा।

(سنن الدارمی،کتاب الرقاق،باب فی اکل السحت،۲/۴۰۹،حدیث:۲۷۷۶)

पस हमेशा रिज़्के हलाल कमा कर अपनी औलाद की परवरिश करने की कोशिश कीजिए कि जो शख़्स इस लिए हलाल कमाई करता है कि सवाल करने से बचे, अहलो इयाल के लिए कुछ हासिल करे और पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करे तो वो क़ियामत में इस तरह आएगा कि इस का चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह चमकता होगा।(شعب الایمان،باب فی الزھد وقصر الامل،۷/۲۹۸،حدیث:۱۰۳۷۵)

(6)--- अच्छी बातें सिखाना

औरतों के मुताअल्लिक़ चूँकि ये बात बड़ी मारूफ़ है कि वो फज़ूल बातों की आदी होती हैं,लिहाज़ा अपनी बेटी को फज़ूल गोई वग़ैरा से बचाने की अच्छी अच्छी नीयतों से कोशिश कीजिए कि जब वह ज़रा होशियार हो जाये और ज़बान

खोलने लगे तो सबसे पहले उस की पाक व साफ़ ज़बान से इस्मे जलालत अल्लाह और कलिमा तय्यिबा ही जारी हो। हज़रते इब्ने अब्बास(رضی اللہ عنہ)से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक,साहिबे लौलाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:अपने बच्चों की ज़बान से सबसे पहले ला-इलाहा इल्लल्लाह कहलवाओ।

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، ٦/٣٩٧، حدیث:٨٦٤٩)

(7)--- इस्लामी तालीमो तर्बीयत

दौरे हाज़िर में अगर मुआशरे का बग़ौर जायज़ा लें तो हर तरफ़ दो ही चीज़ें नज़र आती है:जदीद तालीमो तरक़्क़ी और नाम निहाद रोशन मुस्तक़बिल के नाम पर एक तरफ़ मग़रिबी तहज़ीब(Western culture)से मामूर मुख़्तलिफ़ (Different)ख़ूबसूरत(Beautiful)और दिल-आवेज़(Attractive)नामों के साथ शहर शहर बल्कि गली गली खुले हुए स्कूलज़ Schools) नज़र आते हैं जिनकी एक कसीर तादाद इस्लाम दुश्मन कुव्वतों के ज़ेरे असर मज़हबो मिल्लत की कुयूद से आज़ाद मुआशरे के हामिल लोग तैयार करने में मगन हैं तो दूसरी तरफ़ हर जगह बिलख़ुसूस बड़े शहरों के पोश इलाक़ों,हाऊसिंग सोसाइटीज़(Housing Societies) वी आई पी पापोलेशन एरियाज़(V.I.P. Population Areas) अपर क्लास रीज़ीडनशल एरियाज़(Upper class residential areas)में इस्लामिक स्कूलज़(Islamic Schools) के नाम पर बद मज़हबों के बनाए गए इदारे और जमिआत हमारी आने वाली नस्लों के ईमान और दीनी हमीयत व ग़ैरत के लिए शदीद ख़तरात का बाइस बन रहे हैं।

लिहाज़ा ज़रूरत इस अम्र की है कि इश्क़े रसूल से सरशार मुआशरा बनाने के लिए दीनी तर्बीयत का एक ऐसा मज़बूत-व-मरबूत लायेहा-ए-अमल इख़्तियार किया जाये जिससे दौरे जदीद के नौजवानों की फिक्रो सोच में तब्दीली आने के साथ साथ ना सिर्फ उनका रुख सूए मदीना हो जाये बल्कि उनका सीना ही मदीना बन जाये।जिसके लिए सबसे पहली सीढ़ी ये है कि आज की इस नन्ही मुन्नी कली की शैतानी तूफ़ान से हिफ़ाज़त की जाये कि आज जिसकी मुस्कुराहट माँ बाप को ग़मों से दूर कर देती है, कल जब पूरी तरह खिल कर किसी के गुलिस्ताँने हयात में

महके तो चारों तरफ़ फ़िज़ा ख़ुश गवार हो जाये। ये बहुत ज़रूरी है कि हम अपनी आइंदा नस्लों बिलख़ुसूस बेटियों को इफ़्फ़तो इस्मत का पैकर बनाने, तौहीदो रिसालत से रोशनास कराने और इस्लाम के नाम पर तन-मन धन क़ुर्बान कर देने के लिए तैयार करें ताकि आशिक़ाने रसूल की इश्क़ो मस्ती से भरपूर माज़ी की कोई दास्तान बनने के बजाए दौरे जदीद में हक़ीक़त का रूप धार सकें और इस के लिए आशिकाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी के महके महके और पाकीज़ा-व-मुअत्तरो मुअंबर दीनी माहौल से बेहतर कोई माहौल नही।

आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत,मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,परवानए-शम्ऐ रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान (رضی اللہ عنہ)फ़रमाते हैं:बचपन से जो आदत पड़ती है कम छूटती है।(فتاویٰ رضویہ،۲۲/۲۱۵)

लिहाज़ा जो लोग एक बेटी की तालीमो तर्बीयत में कोताही के मुर्तक़िब होते हैं दर हक़ीक़त वह आने वाली नस्ल की तालीमो तर्बीयत में कोताही के मुर्तक़िब होते हैं। चुनांन्चे एक बेटी की परवरिश के दौरान तालीमो तर्बीयत के जिन जिन मराहिल को पेशे नज़र रखना ज़रूरी है उन पर अहमीयत देकर अमल करना बहुत ज़रूरी है।

बे औलादी के 4 रुहानी इलाज

अब आख़िर में बे औलादी के कुछ औराद पेश किए जाते हैं चुनांन्चे मेरे शैखे तरीक़त,अमीरे अहले सुन्नत,पीरे कामिल,सुन्नतों के आमिल,हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इलयास अत्तार कादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ زِیْدَ مَجْدُہٗ وَشَرَفُہٗ وَعِلْمُہٗ وَعَمَلُہٗ अपने रिसाले बनाम**"ज़िंदा बेटी कुँवें में फेंक दी"**के सफ़हा नंबर 22 पर बे औलादी के चार रुहानी इलाज बयान करते हुए लिखते है:

(हर विर्द के अव़्वलो आखिर एक एक-बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

(1)--- हर नमाज़ के बाद300बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِपढ़ने का मामूल बना लीजिए। अल्लाह ने चाहा तो साहिबे औलाद हो जाऐगें। (इस्लामी बहन और इस्लामी भाई दोनों पढ़ सकते हैं।

(2)--- मियां बीवी दोनों56बार لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ बीच रात में पढ़ कर "मिलाप' करें तो अल्लाह पाक की रहमत से नेक औलाद की विलादत हो, जो कि अपने माँ बाप के लिए सामाने राहत बने।

(3)--- 41 बार रोज़ाना یَااَوَّلُ पढ़िए, अल्लाह ने चाहा तो साहिबे औलाद हो जाऐंगे। (पढ़ने की मुद्दत 40दिन)

(4)--- 40 लौंग लेकर हर एक पर सूरह नूर की आयत नंबर40

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ یَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ یَدَهٗ لَمْ یَكَدْ یَرٰىهَا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ۠ (۴۰)

सात बार पढ़ कर दम कीजिए (कोई भी पढ़ सकता है) जिस दिन औरत हैज़ से पाक हो, ग़ुस्ल कर के उसी दिन से रोज़ाना सोते वक़्त एक लौंग खाना शुरू करे और खाने के बाद पानी ना पिए,इन40दिनों में शौहर के साथ कम अज़ कम एक बार ज़रूर "मिलाप' करले (ज़्यादा बार में भी हर्ज नहीं),अल्लाह ने चाहा औलाद नसीब होगी।

औलादे नरीना के रुहानी इलाज

मेरे शैखे तरीक़त,अमीरे अहले सुन्नत,पीरे कामिल,सुन्नतों के आमिल, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इलयास अत्तार कादरी रज़वी زِیْدَ مَجْدُہٗ وَشَرَفُہٗ وَعِلْمُہٗ وَعَمَلُہٗ अपने रिसाले बनाम**"ज़िंदा बेटी कुँवें में फेंक दी"**के सफ़ा नंबर 23 और 24 पर औलादे नरीना के रुहानी इलाज बयान करते हुए लिखते है:

(हर विर्द के अव्वलो आखिर एक एक-बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

(1)یَا مُتَکَبِّرُ 10बार, ज़ौजा से "मिलाप"से पहले पढ़ लेने वाला नेक बेटे का बाप बनेगा।ان شاء اللہ

(2) हामिला औरत शहादत की उंगली अपनी नाफ़ के गिर्द घुमाते हुए 70बार पढ़े یَا مَتِیْنُ ये अमल40दिन तक जारी रखे, अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से बेटा इनायत होगा। इस अमल में हर मर्ज़ का इलाज है। कोई सा भी मरीज़ ये

अमल करे तो ان شاءاللہ शिफ़ा पाए।(नाफ़ से कपड़ा हटाने की ज़रूरत नहीं,कपड़े के ऊपर ही से ये अमल करना है।

(3) हमल शुरूअ होने के पहले महीने किसी दिन सिर्फ एक बार ज़ौजा की सीधी तरफ़ की पसली पर54बार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ लिख दे तो ان شاء اللہ बेटे का बाप बनेगा। बिगैर स्याही (ink) के सिर्फ शहादत की उंगली से लिखना है, ऐराब ना लगाऐं, और एक जगह लिख कर उसी पर बार-बार लिखने में हर्ज नहीं।

(4) बे औलाद मर्द7 नफ़्ल रोज़े रखे और रोज़ाना इफ़तार का वक़्त जब क़रीब हो तो يَامُصَوِّرُ(21बार) पढ़े और पानी पर दम करके बीवी को पिला दे(अगर बीवी भी रोज़ादार हो तो चाहे तो उसी पानी से रोज़ा खोले)अल्लाह पाक की इनायत से नेक बेटे की विलादत होगी। बाँझ (यानी जिसे औलाद ना होती हो ऐसी औरत भी चाहे तो ये अमल करे और दम कर के उस पानी से इफ़्तार कर ले। (चाहें तो दोनों अलग अलग औक़ात में भी ये अमल कर सकते हैं)

(5) हामिला के पेट पर हाथ रखकर शौहर इस तरह कहे:

اِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهٗ مُحَمَّدًا

तर्जमा: अगर लड़का है तो मैंने उस का नाम मुहम्मद रखा।

(ان شاء اللہ) लड़का पैदा होगा।अगर कहते वक़्त अरबी इबारत के माना ज़ेहन में हो तो तर्जमा के अल्फ़ाज़ कहने की ज़रूरत नहीं वर्ना तर्जमा के अल्फ़ाज़ भी कह लें।

(6) बेटा ना होता हो,या बे औलाद हो,या कच्चा हमल गिर जाता हो या पैदाइश के बाद बच्चे फ़ौत हो जाते हों तो कच्चे सूत के सात धागे औरत को बिल्कुल सीधी खड़ी कर के या एक दम सीधा लिटा कर उस की पेशानी के बालों से पांव की उंगलियों तक नाप लीजिए और सातों धागे मिला कर उन पर ग्यारह बार इस तरह आयतुल कुर्सी शरीफ़ पढ़िए कि हर बार एक गिरह यानी गांठ लगाते जाऐं और दम करते जाऐं। इस गंडे को (हस्बे ज़रूरत कपड़े की बड़ी पट्टी पर लंबाई में रखकर सिल लीजिए ताकि पेट बड़ा हो जाने की सूरत में भी काम चल सके,

फिर भी अगर तंग पड़ जाये तो कपड़े की पट्टी में जोड़ लगा सकते हैं औरत की कमर पर बाँधें।जब तक बच्चा पैदा ना हो जाये हरगिज़ ना खोलिए यहां तक कि ग़ुस्ल के वक़्त भी जुदा मत कीजिए।जब हमल के आसार ज़ाहिर हों तो घर की पकाई हुई सफ़ैद मीठी चीज़ (मसलन मीठे सफ़ैद चावल पर सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक,हज़रते शैख़ मुहम्मद अफ़ज़ल और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान की फ़ातिहा दिलाईए और औरत दो रकअत नफ़्ल अदा करे फिर खड़े हो कर बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ रूख करके इस तरह अर्ज़ करेः

या ग़ौसल आज़म अगर मेरे यहां लड़का पैदा हुआ तो आपकी ग़ुलामी में दे दूँगी और उस का नाम ग़ुलाम मुहीय्युद्दीन रखूँगी।

अल्लाह ने चाहा तो लड़का ही पैदा होगा।जब बच्चा पैदा हो तो ग़ुस्ल देकर कानों में अज़ान के बाद वो गंडा माँ की कमर से खोल कर बच्चे के गले में पहना दें (चाहें तो कपड़े की पट्टी उधेड़ कर गाँठें लगाया हुआ असल गंडा भी गले में डाल सकते हैं और बच्चे की पैदाइश के रोज़ से हर साल ग़ौसे पाक की नियाज़ के लिए एक रुपया अलैहिदा जमा करते रहें।जब बच्चा ग्यारह साल का हो जाए तो उन ग्यारह रूपयों की शीरीनी या मज़ीद जितनी चाहें रक़म मिलाकर ग़ौसे पाक की नियाज़ करें और फिर उस गंडे को महफ़ूज़ जगह पर दफ़न कर दें।

अल्लाह पाक की ज़ात से उम्मीद रखते हुए बयान किए हुए आमाल में से कोई सा भी अमल कीजिए अल्लाह ने चाहा तो औलाद की नेअमत से सरफ़राज़ होंगे।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ गो हूँ कि जिनका आँगन औलाद से सूना है उस को औलाद से चमने आरा बना दे। आमीन

अल कौलुल अज़हर शरह अल फ़िकहुल अकबर

अक़ाइद के मुताअल्लिक़ 1300 साल पुरानी इमामे आज़म अबू हनीफा की अहम किताब "अल फ़िकहुल अकबर' की आसान उर्दू शरह है मज़ीद बातिल फ़िर्क़ों के मुख़्तसर तआरुफ़-व-अक़ाइद का भी बयान शामिल है।

आप इस किताब में पढ़ सकेगें:

1: अक़ाइद के कितने और कौन कौन से इमाम हैं?
2: अल्लाह पर ईमान लाने से क्या मुराद है?
3: वाहिद और अहद में क्या फ़र्क़ है?
4: क्या अल्लाह अदद के ऐतबार से एक है?
5: क्या अल्लाह अपनी मख़लूक़ के मुशाबेह है?
6: अल्लाह की सिफ़ाते ज़ाती और फ़ेअली क्या हैं?
7: हादिस और क़दीम का क्या मअना है?
8: क़ुरआन के मख़लूक़ होने, ना होने की बहेस।
9: अल्लाह की सिफ़ात क़दीम कैसे हैं?
10: अहले सुन्नत की निशानी इमामे आज़म के ज़माने में।
11: क्या ज़मीन घूमती है?
12: अल्लाह का किसी को गुमराह करने के क्या मअना हैं?
13: बंदों के अफ़आल का ख़ालिक़ कौन है?
14: क्या गुनाह भी अल्लाह के हुक्म से होते हैं?
15: मुर्तक़िबे कबीरा के बारे में बहेस।
16: क्या तमाम कुरानी आयात फ़ज़ीलत में बराबर हैं?
17: 73 फ़िर्क़ों के बारे में मुख़्तसर मालूमात और उनके अक़ाइद।
18: अगले महीने का चांद कब नज़र आएगा? मालूम करने का फ़ार्मूला।

इमामत टेस्ट की तैयारी करने के लिए बेहतरीन किताब बनाम

निसाब मसाइले नमाज़

सुवालन जवाबन

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

अपनी जरूरत का इल्म सीखना फर्ज है	हुसूले इल्म के जराए
चंदे के मसाइल	नमाज़ की शराइत
नमाज़ के फराइज़	नमाज़ के वाजिबात
नमाज़ के मुफ़सिदात	नमाज़ के मकरूहात
सज्दए सहव के मसाइल	इमामत की शराइत
इकतिदा की शराइत	नमाज़े जुमा के मसाइल
नमाज़े ईद के मसाईल	माज़ूरे शरई के मसाइल
जमाअत का एक अहम मसअला	शरई मुसाफिर के मसाइल
नमाज़े जनाज़ा के मसाइल	सज्दए तिलावत के मसाइल
अज़ानो इकामत के मसाइल	लुक्मा के मसाइल